

हिन्दी आवृत्ति

चैतन्य लहरी

खण्ड - XII

सितम्बर-अक्टूबर-2000

अंक 9 & 10



आप स्वयं ही अपने गुरु हैं। अतः देखिए कि हमारे अन्दर क्या खराबी है। क्या हम अपने हृदय से पूरी तरह से सहजयोग को अपनाते हैं या नहीं।

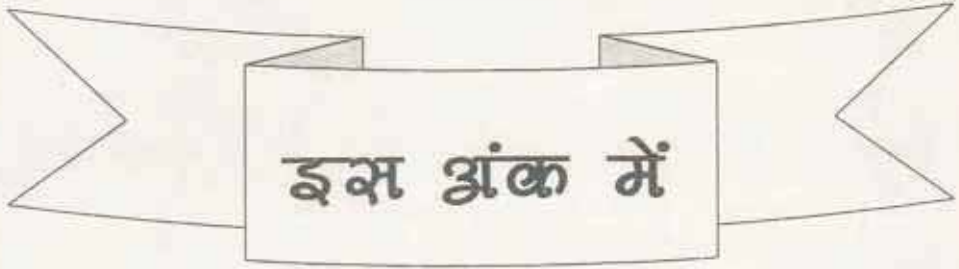
शिवरात्रि पूजा 5.3.2000
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी



नीचे दिए गये चित्र में
ओंकार का बड़ा
प्रतिरूप।



सहजयोगियों द्वारा नासिक (महाराष्ट्र) में किए जा रहे यज्ञ की पावन अग्नि से प्रकट
होते ओंकार।



1.	सहस्रार पूजा-7.5.2000	3
2.	शिवशक्ति पूजा 5.3.2000	15
3.	भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारियों के सम्मुख प्रवचन दिल्ली-8.4.2000	21
4.	अन्य लोगों को प्रभावित कैसे करें-17.9.86	36

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34
फोन : 7184340



सहस्रार पूजा

कबैला 7.5.2000

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सहजयोग में आप विनम्र होते हैं और प्रतिक्रिया नहीं करते। तीस वर्ष पूर्व जब सहस्रार खोला गया तो मुझे चहुँ ओर अंधेरा दिखाई दिया। लोग अत्यन्त अज्ञानी थे। उन्हें क्या खोजना है इस बात की बिल्कुल भी चेतना न थी। निःसन्देह मुझे लगा कि वे किसी अज्ञात चीज को पाना चाहते थे। परन्तु वे नहीं जानते थे कि वह अज्ञात तत्व क्या है जिसे उन्हें खोजना है। अपने विषय में, अपने वातावरण के विषय में और जीवन के लक्ष्य के विषय में वे कुछ नहीं जानते थे। मेरे समझ में नहीं आता था कि किस प्रकार उस विषय को आरम्भ किया जाए। सहस्रार खोलने के बाद मैंने केवल एक महिला पर आत्मसाक्षात्कार का प्रयोग करना चाहा। वह एक वृद्ध महिला थी। उनके साथ एक अन्य महिला भी आने लगी।

इस महिला को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया और तत्पश्चात् एक अन्य महिला, जो कि आयु में बहुत छोटी थी, ने मुझे बताया कि उसे दौरे पड़ते हैं और वह भूत बाधित हो जाती है। हे परमात्मा! मैंने कहा, "किस प्रकार मैं इसकी जागृति करूँगी।" परन्तु वह भी शीघ्र ही ठीक हो गई और उसे भी आत्मसाक्षात्कार मिल गया। यह अत्यन्त अज्ञात ज्ञान है। परन्तु मानव अपने अहंकार में यह स्वीकार करने के लिए नहीं रुकता कि वह अभी अपूर्ण है और उसे चैतन्य लहरी ■ खंड : XII अंक : 9 & 10, 2000

आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो सकता है। उनकी जीवन शैली भी ऐसी है कि उनके पास अपने लिए समय नहीं है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के लिए लोगों को समझाना मुझे बहुत कठिन लगा क्योंकि आत्मसाक्षात्कार को वे कल्पना मात्र मानते थे। वे समझते थे कि यह बहुत दूर की बात है और गुरुओं में विश्वास करते थे जो उनसे सीधे से कहें, "इतने कर्मकाण्ड प्रतिदिन करो।" अपने गुरुओं की देख-रेख में वे ये सभी कर्मकाण्ड कर रहे थे, उन्हें इस बात का भी ज्ञान न था कि सर्वप्रथम आपको स्वयं को जानना होगा जैसा कि सभी महान अवतरणों और सन्तों ने कहा है। यह केवल मेरी ही धारणा न थी कि लोग आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करें, इन सब लोगों का भी यही विचार था। सदियों तक एक के बाद एक सन्त तथा अवतरण ने कहा कि स्वयं को खोजो। ईसा मसीह ने भी कहा कि स्वयं को पहचानो, मोहम्मद साहब ने भी वही बात कही और नानक साहब ने भी। परन्तु किसी मनुष्य ने भी यह जानने का प्रयत्न नहीं किया कि यह कर्मकाण्ड जीवन का अन्तिम लक्ष्य नहीं है, इससे कुछ प्राप्त न होगा तथा व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना ही होगा। तो केवल उन दोनों महिलाओं ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। इसके पश्चात् मैंने सोचा कि समुद्र तट पर चलें। तीस लोग मेरे साथ आए और वो भी

बड़े ही अटपटे ढंग से बातचीत कर रहे थे कि किस प्रकार उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो सकता है? वे तो इसके अधिकारी भी नहीं हैं। इतने भले तो वे कभी भी न थे। सभी प्रकार की बातें कर रहे थे। अपनी भर्त्सना कर रहे थे। परन्तु उस समूह में से भी मुझे बारह लोग ऐसे मिल गए जिन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। वो दो महिलाएं भी इन्हीं में से थीं। इससे पता चलता है कि स्वयं को पहचानने की गति बहुत कम होती है क्योंकि लोग यही नहीं समझते कि क्यों वे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें। मुझे अत्यन्त निराशा हुई क्योंकि मेरी बात कोई समझता ही न था। एक दिन ऐसा हुआ कि मेरे कार्यक्रम में एक महिला आई। वह भूत बाधित थी और उसने संस्कृत बोलनी शुरू कर दी। वह मात्र नौकरानी थी। सभी लोग हैरान हो गए, परन्तु वह कहने लगी, "कि तुम नहीं जानते ये कौन हैं?" और तब उसने सौन्दर्य लहरी, के अनुरूप मेरा वर्णन करना आरम्भ कर दिया। मैं भी हैरान थी कि इस महिला को क्या हुआ! पुरुष की आवाज में वह बोल रही थी। लोग इस बात पर विश्वास करें या न करें परन्तु वह भयानक भूत बाधित थी। तब लोग मेरे पास आए और पूछने लगे कि जो यह महिला कह रही है क्या यह सत्य है?" मैंने कहा आप स्वयं इसका पता लगाओ। उन दिनों लोग ऐसे होते थे कि उनसे अगर इस प्रकार की कोई बात कह दी जाए तो वो अपना मुँह मोड़ लेते थे। वे केवल ऐसे कुगुरुओं से ही प्रसन्न रहते थे जो उनसे पैसे ऐंठता रहे। वो सांचते थे कि गुरु को तो अब हमने खरीद ही लिया अब किस बात की चिन्ता है। तुम्हें कुछ

नहीं करना। तो इस प्रकार शनैः शनैः यह कार्य कार्यान्वित होने लगा और मुझे याद है कि जिन लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ वे मुझसे कहने लगे, "श्रीमाताजी आप हमें दुर्गा पूजा करने की आज्ञा दें। दुर्गा पूजा को बहुत कठिन पूजा माना जाता था और ब्राह्मण लोग प्रायः इस पूजा को करने के लिए तैयार न होते थे क्योंकि वे आत्मसाक्षात्कारी न थे। दुर्गा पूजा कराने वाले पण्डितों को मूर्च्छा आदि की समस्या हो जाया करती थी। तो उन लोगों ने सात ब्राह्मण बुलवाए और उनसे कहा कि तुम्हें किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। तुम्हें कुछ नहीं होगा क्योंकि आप साकार दुर्गा के सम्मुख बैठे हुए हो। ये कोई मूर्ति नहीं है। यह साकार की पूजा है। वे काफी घबरा गए थे और स्थान से उतरना चाह रहे थे। अचानक उनके अन्दर कुछ हुआ और बड़े ही आत्मविश्वास के साथ उन्होंने मन्त्र आदि का उच्चारण प्रारम्भ कर दिया। चहुँ ओर चैतन्य लहरियाँ फैल गईं। हम लोग समुद्र के बहुत नजदीक थे और समुद्र भी दहाड़ रहा था। परन्तु इन सात पण्डितों के अतिरिक्त किसी को कुछ समझ नहीं आया। ये कहने लगे हमें कुछ नहीं हुआ, हमने सभी कुछ भली भाँति किया है। मेरे विचार से यह घटना प्रथम चमत्कार ही थी। मानव मस्तिष्क की इस स्तर पर और ऐसे समय में स्थिति देखो। वह स्वयं को बहुत महत्वपूर्ण मान लेते हैं और अपना कोई अन्त उन्हें दिखाई नहीं देता। उन पण्डितों ने भी यही समझा कि वे बहुत महान हैं। स्वयं को समझने के लिए क्या है? हम स्वयं को पहचानते हैं।

तो विनम्रता साधना की प्रथम आवश्यकता है। आप यदि सोचते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं तो आप विनम्र नहीं हो सकते और न ही कुछ प्राप्त कर सकते हैं। साधना करते हुए भी ऐसा व्यक्ति किसी के बताए हुए मार्ग पर नहीं चल सकता और कहता है कि मैं अपने ही मार्ग पर चलूंगा। हमारा अपना ही एक मार्ग है जिसके अनुसार हम चलेंगे। जो भी हम चाहते हैं करते हैं। भिन्न देशों में भिन्न प्रकार के लोगों से मेरा पाला पड़ा जो केवल मेरा भाषण सुनने के लिए आते हैं। वस, समाप्त। वो आत्मसाक्षात्कार भी न लेंगे। उनमें से कुछ ने आत्मसाक्षात्कार लिया भी परन्तु पाकर भी इसे खो दिया। मेरे लिए यह अत्यन्त अजीब कहानी थी कि मैं उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे रही हूँ। बेकार ही मैं ऐसे लोगों को साथ ले चल रही हूँ। अपने खर्चे से मैं यात्रा किया करती थी। इसके बावजूद भी क्यों नहीं ये लोग आत्मसाक्षात्कार का मूल्य समझते? तब एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति ने मुझे बताया कि आज का समाज उपभोक्ता समाज है। जब तक आप इनसे पैसा नहीं लेंगे, उन्हें इसका मूल्य समझ नहीं आएगा। उन्हें महसूस करवाएं कि उन्होंने अपने आत्मसाक्षात्कार के लिए धन खर्च किया है। दरवाजे पर ही किसी व्यक्ति को पैसा लेने के लिए बिठा दें अन्यथा ये लोग आत्मसाक्षात्कार नहीं लेंगे। मैंने कहा, "परन्तु इसे बेचा नहीं जा सकता, ऐसा करना तो अनुचित होगा। लोगों को आत्मसाक्षात्कार बेचा नहीं जा सकता। कहने लगा, तब आप सफल नहीं हो सकतीं और न ही अन्य गुरुओं से मुकाबला कर सकती हैं। अन्य गुरुओं की चेतन्य लहरी ■ खंड : XII अंक : 9 & 10, 2000

विशेषता ये है कि वे धन स्वीकार करते हैं और लोगों से कहते हैं कि इतना पैसा लेकर आओ, ऐसा करो, ये फीस है। इस प्रकार लोगों का अहं शान्त होता है और वे असत्य को स्वीकार कर लेते हैं। इस असत्य का अहसास बाद में उन्हें हो जाएगा क्योंकि इसके कारण उन्हें बहुत सी शारीरिक और मानसिक समस्याएं हो जाएंगी परन्तु तब तक वे पतन के कगार पर होंगे।

सहस्रार का वर्णन किसी भी धर्म ग्रन्थ में नहीं किया गया यद्यपि इसके विषय में भारतीय प्राचीन पुस्तकों में बताया गया है। सहस्रार की बातचीत तो की परन्तु किसी ने इसका वर्णन नहीं किया। केवल इतना बताया कि इसकी एक हजार पंखुड़ियां होती हैं। यदि उन्होंने इसका थोड़ा सा वर्णन किया होता तो मेरे लिए लोगों को ये समझाना सुगम हो गया होता कि इस ग्रन्थ में ऐसा लिखा है। लोग इस बात को पसन्द करते हैं कि हर बात किसी ग्रन्थ में लिखी होनी चाहिए। तभी वो इसे स्वीकार करते हैं। स्थिति काफी कठिन थी क्योंकि किसी ने भी आज तक सामूहिक आत्मसाक्षात्कार न दिया था। एक दो लोगों के अतिरिक्त किसी ने भी इसके विषय में नहीं लिखा और इन लेखकों ने कुण्डलिनी के विषय में स्पष्ट लिखा। परन्तु मेरे विचार से पद्य (कविता) में लिखा होने के कारण यह भी स्पष्ट न था। लोग इसके विषय में भजन गाते परन्तु समझते कुछ भी नहीं। मैं सोचती कि साधना में यहाँ-वहाँ भटके इन लोगों का क्या होगा और किस प्रकार मैं उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे पाऊंगी? मेरे अनुभव बहुत ही कष्टकर थे। परन्तु कोई बात नहीं। मैं आगे बढ़ती गई, बढ़ती

गई और इसे कार्यान्वित किया। निःसन्देह बहुत से क्रूर और अप्रिय लोगों का सामना मुझे करना पड़ा जिन्होंने मुझे भी बहुत कष्ट पहुँचाया और सहजयोगियों को भी। ये सारी चीजें मेरे उत्साह को दुर्बल कर सकती थीं परन्तु इसके विपरीत मैंने सोचना आरम्भ कर दिया कि लोग ऐसे क्यों हैं? और तब मुझे महसूस हुआ कि पूरे विश्व को तो हम आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकते। यह अन्तिम निर्णय है। इस समय लोगों को निर्णय करना होगा कि सबसे महत्वपूर्ण चीज़ क्या है? उन्हें स्वयं को पहचानना होगा कि वे क्या कर रहे हैं? लम्बी सी 'नहीं' कर देने से बात नहीं बनेगी। केवल दृढ़ सहजयोगी ही इस कार्य में सहायता कर सकते हैं। तब मैंने देखा कि लाइलाज रोगों से मुक्त हुए लोग भी गायब हो गए। नशे, शराब और धूम्रपान के आदी लोगों ने ये सब छोड़ दिया। मैंने कभी भी कुछ छोड़ने के लिए नहीं कहा। मैं जानती हूँ कि जब कुण्डलिनी उठती है तो वे स्वतः ही लोग बहुत शुद्ध और सुन्दर बन जाते हैं और अपने जीवन का आनन्द लेने लगते हैं। परन्तु उन पर कोई विश्वास ही नहीं करता था। वो लोग जाकर जब अन्य लोगों से बताते तो वे कहते ये पागल हो गए हैं। लोगों को समझ में न आता कि किस प्रकार इन्होंने शराब पीनी छोड़ दी किस प्रकार धूम्रपान त्याग दिया? जब हम पीना चाहते हैं तो ये जागृति क्या है? ऐसे लोगों की पहचान करने पर मैंने जाना कि ये लोग अत्यन्त घटिया चीज़ों का आनन्द लेने वाले थे। ऐसा आनन्द जिसका आत्मा से कोई लेना देना नहीं। परन्तु शनैः शनैः ये कार्यान्वित होने लगा। फिर भी मैं कहूँगी कि इस घोर चेतन्य लहरी ■ खंड : XII अंक : 9 & 10, 2000

कलियुग में हम ये आशा नहीं कर सकते कि खरबों की संख्या में लोग सहजयोग करें। यद्यपि ये मेरी भी कामना है और आप लोगों की भी और आप चाहते हैं कि सभी लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें जिससे बहुत सी अच्छी चीज़ें घटित हों। बहुत से लोग रोग मुक्त हुए। ईसा मसीह ने केवल 21 लोगों को ही स्वस्थ किया था। मैं नहीं जानती कि कितने हजारों लोग सहजयोग से ठीक हुए हैं?

मनुष्य के साथ एक अन्य समस्या भी है कि वे सभी प्रकार की उल्टी-सीधी पुस्तकें पढ़ते हैं। उनके विचार स्पष्ट नहीं हैं कि वे क्या खोजें। वे नहीं जानते कि उनकी खोज क्या है। ये बहुत बड़ी समस्या है। और जो भी कहीं कुछ उपलब्ध है वे उसका अनुसरण करने लगते हैं। ये अस्थिर प्रवृत्ति लोग हैं, एक मार्ग से दूसरा मार्ग ये अपनाते रहते हैं और सहजयोग में इनकी उन्नति बहुत कठिन है। क्योंकि एक मार्ग पर चलते-चलते यदि आप दूसरा मार्ग पकड़ लेते हैं तो हो सकता है वहीं पहुँच जाएँ जहाँ से चले थे। वे सोचते हैं उन्हें ऐसा करने की स्वतन्त्रता है। वास्तव में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किए बिना आपको कोई भी स्वतन्त्रता नहीं है। स्वतन्त्रता वह होती है जिसमें आप जानते हों कि आप क्या हैं और आपमें क्या योग्यता है। स्वतन्त्रता में आप ही सारे आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। आशीर्वाद यदि नहीं मिलते तो आप स्वतन्त्र नहीं हैं। आपके जीवन में कहीं न कहीं कुछ कमी है। एक बार आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने के पश्चात् आप पूर्णतः स्वतन्त्र मानव बन जाते हैं। स्वतन्त्र, माने आपको आत्मा आपको

पथ प्रदर्शन करती है। जैसा आप जानते हैं आत्मा परमेश्वर का, सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। सभी लोगों में यदि एक ही सा प्रतिबिम्ब है और यदि सभी लोग जागृत हैं तो चेतना में ये कार्य करता है। मानो ये जानते हों कि ठीक क्या है गलत क्या है। सृजनात्मक क्या है और विध्वंसक क्या है? ये कोई झूठा संतोष नहीं है। वास्तविकता है। वास्तविकता को आप अनुभव करते हैं और यही घटित होना होता है। अनुभव सहजयोग में पहली चीज है। अनुभव जो आप अपने अन्दर करते हैं—स्पन्द, अपनी अंगुलियों के सिरों पर शीतल लहरियों का अनुभव। अनुभव के बिना आपको इसका विश्वास नहीं करना चाहिए। इसका अर्थ ये है कि अब आपके नाड़ी तन्त्र पर एक नया आयाम आ गया है कि अब आप एक नई प्रणाली को महसूस कर सकते हैं जो अब तक आप नहीं जानते थे। अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र तो पहले से था परन्तु इसको कार्यशीली का ज्ञान आपको न था। आपका आत्मज्ञान अत्यन्त दुर्बल था। परन्तु आत्मसाक्षात्कार के बाद अचानक हर चीज ज्योतिर्मय हो उठी। अचानक आपको अपने अन्दर एक नयापन महसूस होने लगता है परन्तु अब भी कभी-कभी आपको अपने अहं से लड़ना पड़ता है और चीजों के विषय में अपनी अज्ञानता पर नियंत्रण करना पड़ता है क्योंकि आत्मसाक्षात्कार आपको पूर्ण ज्ञान देता है। पूर्ण ज्ञान। इसे चुनौती नहीं दी जा सकती। इसके संकेतों को जाँचा जा सकता है और पता लगाया जा सकता है कि ये ठीक है कि गलत है। ये घटना आप सबके साथ घटित हो चुकी है और आप सब वो चैतन्य लहरियाँ पा चुके हैं जिनसे चैतन्य लहरो

आप चीजों को महसूस कर सकें।

उदाहरण के रूप में हो सकता है सहजयोग में कुछ असन्तुष्ट लोग हों। परन्तु इसके विषय में आप चैतन्य लहरियों के माध्यम से पता लगा सकते हैं। ये कौन लोग हैं ये क्या कर रहे हैं। चैतन्य लहरियों द्वारा आप जान सकते हैं कि उनमें से कौन लोग सत्य की उस अवस्था तक पहुँचे हैं। आप समझ सकते हैं कि आपका विरोध करने वाले ये लोग आपको क्या बताने का प्रयत्न कर रहे हैं और इनकी गहनता कितनी है। अपनी अंगुलियों के सिरों पर आप इसे जान सकते हैं। यही कयामा है, जिसके विषय में मोहम्मद साहब ने बताया। मैं आपको अपना उस दिन का अनुभव बताऊँगा। एक व्यक्ति आया और स्वयं को दूरदर्शन का अधिकारी बताकर मुझसे उल्टे सीधे सवाल करने लगा, जिनका कोई सिर पैर ही न था। उसका नाम अब्बास था। मैंने उससे कहा अब्बास मियाँ आप अपना और मेरा दोनों का समय बर्बाद कर रहे हैं। क्या आप सही प्रश्न पूछेंगे? कहने लगा मैं सारी धर्मान्धता के विरुद्ध हूँ। मैंने कहा मैं तो धर्मान्ध नहीं हूँ आप कैसे जानते हैं मैं धर्मान्ध हूँ या नहीं? कहने लगा मैं ये जानने का प्रयत्न कर रहा हूँ। ठीक है मैंने कहा, आप अपने दोनों हाथों को मेरी तरफ करें। मोहम्मद साहब ने कहा है कियामा के वक्त आपके हाथ बोलेंगे और आप हैरान हो जाएंगे। तुरन्त उसके दोनों हाथों में शीतल लहरियाँ महसूस होने लगी। कहने लगा, "कि ये क्या है?" मैंने कहा, "यही वास्तविकता है"। वाद विवाद करने का या इसके विषय में बातचीत करने का तथा पूछताछ करने का कोई लाभ

नहीं। स्वयं इससे देखा इसका अनुभव करो। वह स्तब्ध था और इसके पश्चात् जो भी बातें उसने मुझसे पहले की थीं वो उसने नहीं छापीं। मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि लोग यदि सत्य तक पहुँच जाएं, सत्य का जान जाएं तो कुछ भी न बिगड़ेगा। महान लोगों के जीवन में, आप देखते हैं, कि केवल पुस्तकों में पढ़कर या अन्धविश्वास द्वारा वे सत्य को स्वीकार नहीं करते। परन्तु अपने मध्य नाड़ी तन्त्र पर वे सत्य का अनुभव करते और तब कोई उन्हें परिवर्तित नहीं कर सकता, वैसे ही जैसे एक बीज जब पेंड बन जाता है तो उसे पुनः बीज में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। बीज तो बीज हैं। यह जब पेंड बन जाता है तो कोई भी इसे अपनी पूर्व स्थिति में नहीं ला सकता। इसी प्रकार आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके जब आप परमात्मा से एकरूप हो जाते हैं तो आपके पतन का प्रश्न ही समाप्त हो जाता है। बड़ी ही प्रशंसनीय बात है कि किस प्रकार आपने वो गुण प्राप्त किया? किस प्रकार आपने अपनी योग्यता को पहचाना और फिर भी आप इसका उपयोग नहीं करते? निःसन्देह इसके लिए आपको ध्यान धारणा करनी होगी। जब आप ध्यान धारणा में उतर जाते हैं तो आपका अस्तित्व ज्योतिर्मय होकर इतना सुन्दर हो जाता है कि फिर आप उसे बदलना नहीं चाहते। उसी स्थिति में रहकर आप सदैव उसका आनन्द लेते हैं। आप ये आनन्द अन्य लोगों में भी बाँटना चाहते हैं क्योंकि आपको लगता है कि आप जब ये आनन्द उठा रहे हैं तो क्यों न अन्य लोग भी इसे पा लें। वैसे ही जैसे आपके पास पर्याप्त भोजन हो और सड़क पर कोई भूखा

आपको दिखाई दे जाए तो आप वह खाना उस भूखे व्यक्ति को देना चाहेंगे। इस विश्व में भी आप लोगों को पागलों की तरह से परमात्मा की खोज में इधर उधर दौड़ते हुए पाते हैं। आप देखते हैं कि वे सभी प्रकार के कर्मकाण्ड कर रहे हैं और आप उन्हें बताना चाहते हैं कि वे इन सब चीजों पर विश्वास करें या न करें। हो सकता है कि वे इस बात से पूरी तरह इन्कार करें, इसका विरोध करें या इसके विषय में कुछ न जान सकें। परन्तु आप निश्चित रूप से जानते हैं कि आप ठीक मार्ग पर हैं और आपकी मनःस्थिति बिल्कुल ठीक अवस्था में है। संस्कृत में इसे सहजावस्था कहते हैं। सहजावस्था में आप प्रतिक्रिया नहीं करते, केवल देखते हैं और आनन्द उठाते हैं। अब आप देखें कि मैं आई और देखा कि सहस्रार और सभी चक्रों का कितना सुन्दर रूप बनाया गया है। इन्हें इतने सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। कोई अन्य व्यक्ति होता तो कहता ओहो! रंगों का सम्मिश्रण ठीक नहीं है। क्यों? इनको इन्होंने क्यों उपयोग किया? इसकी जगह इन्होंने कोई और रंग क्यों नहीं लगाए? इस प्रकार से दूसरों में दोष ढूँढते हैं। दूसरों में दोष ढूँढना उस मस्तिष्क की देन होता है जो अभी तक ज्योतिरहित नहीं हुआ। प्रतिक्रिया के संस्कार के कारण आप किसी चीज का आनन्द नहीं ले सकते। सदैव प्रतिक्रिया करने में लगे रहते हैं। कोई यदि अच्छी बात बताए तो भी आप प्रतिक्रिया करने में लगे रहते हैं। बुरी बात पर तो आप प्रतिक्रिया करते ही हैं। अतः हमें समझ लेना

चाहिए कि हमें प्रतिक्रिया करने की स्वतन्त्रता नहीं है। हम इतने हल्के नहीं हैं कि प्रतिक्रिया करें। बहुत ऊँचे स्थान पर हम बैठे हुए हैं। केवल आनन्द उठाना ही हमारा कार्य है। हर चीज़ का आनन्द उठाएँ क्योंकि वह आनन्द परमात्मा का आशीर्वाद है। जीवन के उथल पुथल और कष्टों का भी आप आनन्द उठा सकते हैं। यदि आप यह बात अच्छी तरह जान लें कि आपकी आत्मा को कुछ भी हानि नहीं हो सकती, क्योंकि यही सच्ची ज्योति है, तो आप हर चीज़ का आनन्द उठा सकते हैं। जो भी तकलीफें आपको हों, चाहे जो भी चीज़ आपको कष्ट दे रही हो परन्तु आत्मा का मौन प्रकाश आपको वास्तव में पूर्णतया आनन्दमय बनाता है और अन्य लोगों को भी आनन्द प्रदान करता है। न तो आप इसकी रूपरेखा बनाते हैं न योजना कि किस प्रकार आनन्द लिया जाए, यह तो स्वतः ही आनन्द प्रदान करता है। आनन्द देने की यह क्रिया बिना किसी प्रयत्न के स्वतः और सहज है क्योंकि आप सहजावस्था में हैं। सहजावस्था में आप चीज़ों को केवल देखते भर हैं। आपको लगता है कि ये तो मात्र एक नाटक है। जिसकी भिन्न शैलियाँ हैं, भिन्न प्रकार हैं। साक्षी रूप में आप इसे देखते भर हैं और इसका आनन्द उठाते हैं। ऐसा कहना आवश्यक नहीं है कि मुझे ये पसन्द है, मुझे वो पसन्द है, बिल्कुल नहीं। यह 'मैं' जो पसन्द करता है वह अहं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। यह आपको उस आनन्द से, जो वास्तविकता है, जो सत्य है, दूर रखता है। संसार की हर चीज़ आपको कष्टकर लगती है

दूसरे कोण से यदि आप देखें, सहजस्थिति से, तो आपको कष्ट महसूस ही न होंगे। परन्तु इसके लिए आपके अन्दर उच्च मापदण्ड बनने आवश्यक हैं। उस दिन मेरी भेंट कुछ सरकारी अधिकारियों से हुई मैंने उन्हें बताया कि मैं जानती हूँ कि वेतन बहुत कम है। आप सोच सकते हैं कि अन्य लोगों को बहुत अधिक वेतन मिलता है और बहुत अधिक सुविधाएँ। परन्तु एक तरह से आपको वास्तव में आनन्द प्राप्त हो सकता है, अपने कार्य से। अपने देश के लिए यदि आपमें भक्ति है तो कोई भी बलिदान आपको लिए अधिक न होगा। किसी को यदि आप कुछ देना चाहते हैं तो कोई भी कष्ट, कष्ट न मानते हुए आप किसी भी स्तर तक जा सकते हैं। ऐसा करने से आपकी भावनाएँ बहुत गहन हो जाती हैं। मान लो आप यात्रा कर रहे हैं और अचानक कोई सहयात्री बहुत बीमार हो जाता है। चैतन्य लहरियों द्वारा आप महसूस कर सकते हैं कि यह व्यक्ति बीमार है। तुरन्त उसके प्रति सहानुभूति और प्रेम उमड़ पड़ता है और आप तुरन्त उसकी सहायता को तत्पर हो उठते हैं। और सम्भव हो तो आप उसे ठीक करने का प्रयत्न भी करते हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि समुद्र सारी नदियों को और सभी प्रकार के जल को अपने पेट में समोह लेता है। सभी कुछ अपने में समा लेता है न तो ये किसी को कष्ट देता है न दुख। यह प्रेम से किसी को बश में करने वाली बात है। समुद्र अपनी शक्ति नहीं दर्शाता, अपने महत्व की चिन्ता नहीं करता कोई यदि आपका अपमान करता है तो ठीक है, अपमान को भी सहन कर लें। ऐसे व्यक्ति जो

सहजावस्था को प्राप्त हो चुके हैं शाश्वत कला, संगीत तथा महान विचारों के सृष्टा होते हैं। बहुत से लोग लिखते हैं जो कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाता है। बहुत से लोग सृजन करते हैं परन्तु कोई उनकी चिन्ता नहीं करता। परन्तु आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति जो भी कुछ सृजन करता है वह शाश्वत (Eternal) होता है। क्योंकि अब वो अनन्तता के सागर में है। अब वे पावित्र्य के सागर में है जहाँ किसी को कष्ट पहुँचाने का, किसी को दुख देने का विचार तक नहीं है। उस स्थिति में सभी को ऐसी सुरक्षा प्राप्त है। कोई उन्हें हानि नहीं पहुँचा सकता क्योंकि आखिरकार आप लोग अब परमात्मा के साम्राज्य में हैं। कौन आपको हानि पहुँचा सकता है या कष्ट दे सकता है? सहजयोगियों में मैंने ऐसी ही सम्पदा, ऐसी ही उदारता और ऐसी ही सूझ-बूझ देखी है। मुझे भाषण नहीं देने पड़ते कि ऐसा करो ऐसा मत करो। न, इसकी कोई आवश्यकता नहीं। जो लोग अभी तक सहजयोग में परिपक्व नहीं हुए हैं उन्हें चाहिए कि परिपक्वता को प्राप्त करें और अन्य लोगों को चाहिए कि यदि ये लोग कष्टकर हैं तो भी इनका बुरा न मानें। इन पर करुणा करें ताकि ये परिपक्व हो सकें। आज बहुत महान दिन है। पिछले तीस वर्ष मैं एक स्थान से दूसरे स्थान तक दौड़ती रही और इतने सारे सहजयोगी एकत्र कर पाई। विश्वभर में अब बहुत से सहजयोगी हैं। यहाँ उपस्थित सहजयोगी तो उनका मात्र एक अंश ही है यह घटित होना ही था। इसका वर्णन किया जा चुका है। इसके विषय में भविष्यवाणियों को गई थी कि ऐसी घटना होगी, और असंख्य लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करेंगे।

चैतन्य लहरों ■ खंड : XII अंक : 9 & 10, 2000

निःसंदेह यह अविश्वसनीय प्रतीत होता है। परन्तु आप अब देखें कि ये एहसास कितना मधुर है। हम सब एक है न कोई झगड़ा है न लड़ाई है न कुविचार। कोई भी घटिया चीजों को पसन्द नहीं करता, सभी आनन्दकर चीजें चाहते हैं और सबसे सूझ बूझ का यह गुण है। मैंने लोगों को कवि बनकर सुन्दर कविताएँ लिखते हुए देखा है। उन्हें सृजन करते हुए देखा है तथा बहुत अच्छे आयोजक बनते हुए भी देखा है। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण चीज जो है वह है विनम्रता। आरम्भ में भी मैंने कहा था और अब फिर कहूँगी कि लोगों को आपको विनम्रता ही आकर्षित करेगी। आपको विनम्र व्यक्ति बनना चाहिए। स्वयं को कभी विशेष न समझें और न ही स्वयं को श्रेष्ठ मानें। स्वयं को यदि आप महत्वपूर्ण समझते हैं तो आप पूर्ण के अंग-प्रत्यंग नहीं रहते। मेरा एक हाथ यदि स्वयं को महत्वपूर्ण मानने लगे तो ये इसकी मूर्खता होगी अकेला हाथ किस प्रकार महत्वपूर्ण हो सकता है? सभी हाथों की आवश्यकता होती है, चीजों की आवश्यकता होती है, टाँगों की आवश्यकता होती है? एक अंग किस प्रकार महत्वपूर्ण हो सकता है। अपनी सहजयोग यात्रा में कभी भी आप यदि इस प्रकार सोचने लगे तो मैं कहूँगी कि आप सहजावस्था में नहीं हैं। मेरा ये प्रयत्न था कि आप लोगों को सहज के सुन्दर क्षेत्रों में ले जाएँ जहाँ आप आत्मा से पूर्णतः एकरूप होंगे, प्रकृति से एकरूप होंगे, अपने आसपास के सभी लोगों से, अपने देश तथा अन्य देशों से एकरूप होंगे। सर्वत्र पूर्ण वातावरण में ब्रह्मानन्द आपका अंग-प्रत्यंग बन जाएगा और आप कभी इससे भिन्न न होंगे।

तब आप कह सकते हैं कि गुँजन या निनाद जो कि आपके जीवन का सारतत्व है वह आपकी भौतिक उन्नति में या किसी अन्य चीज़ में न दिखाई पड़कर आपके आध्यात्मिक क्षेत्र में दिखाई पड़ेगा और यही क्षेत्र सर्वोच्च है। सर्वत्र सभी देशों में उच्च गुणों के लोग हांते हैं और उन सबको याद किया जाता है। इसी प्रकार आप भी अपने जीवन की वास्तविकता तथा सच्चाई के महान ज्ञान का प्रतिनिधित्व करेंगे। और यह सब आपके जीवन और आपके कार्यों में छलकेंगा। इस तरह से आप इस कार्य को कर सकते हैं। केवल यह निर्णय करना है कि कितने लोगों को हमने आत्मसाक्षात्कार देना है। आत्मसाक्षात्कार देने के लिए हम क्या कर सकते हैं? इसके लिए हमें क्या करना चाहिए? अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता में आप यदि इस कार्य को करते चलें तो आप हैरान होंगे कि यह पहाड़ की चोटी पर चढ़ने जैसा कार्य है। परन्तु जब आप चोटी पर चढ़ जाते हैं तो नीचे की सभी चीज़ों को भली भाँति देख सकते हैं और आपको सन्तोष होता है कि आप चोटी पर हैं। लेकिन चोटी की चढ़ाई तो आपको करनी होगी। इसमें कोई समस्या नहीं है। आप सब इस कार्य को कर सकते हैं। आपके अन्दर अपने प्रति सम्मान, प्रेम एवं सृष्टि-बुद्धि होनी चाहिए कि हमें पर्वत की इस चोटी पर पहुँचना है। एक बार जब आप इस शिखर पर पहुँच जाएं तो समझ लें कि आप वहाँ पर हैं और अपने प्रेम, अपने स्नेह की वर्षा करनी शुरू कर दें, और उन सब आशीर्वादों की जो शिखर से पहले हैं। यदि यही आपका जीवन है तो यह महानतम है। महान कहलाने वाले बाकी सब

लोगों को, राजनीतियों को भूल जाएं। उन्हें भूल जाएं। आप उनसे कहीं महान है क्योंकि आप जीवन की सहज शैली के साथ एक हीरे की तरह से हैं यह सहज जीवन शैली अत्यन्त सन्तोष एवं पूर्ण शान्ति प्रदायक है। यह आपको आनन्द शान्ति क्षेम तथा अन्य इतने वरदान देती है कि आप इनके वर्णन नहीं कर सकते हैं। आपके सहस्र दल सहस्रार की तरह से ज्योतिर्मय हैं। परमात्मा ही जानता है कि आप इससे क्या-क्या प्राप्त कर सकते हैं। आप इतने महान क्षेत्र में हैं। एक हजार पंखुड़ियाँ जहाँ से लोगों ने विज्ञान का सारा ज्ञान प्राप्त किया है तथा सभी महान आविष्कार वहाँ से प्राप्त हुए हैं। अतः यही चीज़ है जो व्यक्ति को महसूस करनी है-आत्मसम्मान। आत्मसम्मान स्वमहत्व से भिन्न होता है। आपमें आत्मसम्मान होना चाहिए यह आपको विनम्र बनाता है। प्रेम करने के योग्य होने के कारण आप अत्यन्त प्रेममय बन जाएंगे। कोई इसे आप पर थोपेगा नहीं। मैं मानती हूँ कि सागर में से बादल उठते हैं और वर्षा करते हैं। जीवन चक्र की तरह से ये कार्य हो रहे हैं। इस बात के प्रति वे जागरूक नहीं हैं। वे ये नहीं सोचते कि वे कुछ महान कार्य कर रहे हैं क्योंकि वे इस चक्र में हैं। परन्तु आप इस चक्र से मुक्त हैं और फिर भी बिना किसी स्वमहत्व की भावना के इस कार्य को कर रहे हैं। आप इस कार्य को कर रहे हैं क्योंकि आपने ही इसे करना है।

दूसरा चक्र, जो कि स्वाभाविक चक्र नहीं है यह चेतना का चक्र (cycle) है। चेतना के चक्र में आप जो भी कार्य करते हैं उसका प्रति चिंतन होते हैं। परन्तु सब कुछ करते हुए भी

आप विनम्र, प्रेममय एवं सुहृदय होते हैं। अत्यन्त ही प्रेममय एवं सुहृदय। न आप किसी पर चीखते चिल्लाते हैं न किसी को पीटते हैं। बिना किसी को कोई कठोर शब्द कहे आप कठिन से कठिन व्यक्ति को भी संभाल सकते हैं।

कोई यदि आपके आड़े आने लगे तो आप उसकी कुण्डलिनी उठाकर सन्तुष्ट हो सकते हैं। बिना बताए यदि आप किसी की कुण्डलिनी उठाते हैं तो वह व्यक्ति नियंत्रित हो जाता है और यदि उसकी कुण्डलिनी आप नहीं उठा सकते तो उसे भूल जाएं क्योंकि वह व्यक्ति अत्यन्त दुष्कर है। हो सकता है वह पत्थर सम हो। आप क्या कर सकते हैं? आप उसमें प्रेम और गरिमा आदि गुण नहीं बहा सकते। पत्थर हृदय लोगों के लिए यह कार्य असम्भव है। उन्हें भूल जाएं। ये आपका कार्य नहीं है, ये आपका कार्य बिल्कुल भी नहीं है। मेरी प्रार्थना है कि सर्वप्रथम आप देखें कि आप कितने विनम्र हैं। आपको विनम्र होना है, यही आपकी सज्जा है और यही आपका गुण। अतः अपने अन्दर प्रेम उत्पन्न करें जो शुद्ध हो, जो वासना और लोभरहित हो। आप अन्य लोगों को सिर्फ इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि प्रेम आपके हृदय से बह रहा है और शान्ति का वरदान आपको प्राप्त है। अपने अन्दर आप पूर्णतया शान्त हैं और यह जानकर आप हैरान होंगे कि विवेक का उद्भव शान्ति से होता है। आपको अत्यन्त विवेकशील पुरुष या महिला समझा जाएगा क्योंकि आपको अन्तर्शान्ति प्राप्त है। शान्ति की इस स्थिति में ही आप सत्य खोज सकते हैं और सभी वांछित समाधान खोज सकते चैतन्य लहरी ■ खंड : XII अंक : 9 & 10, 2000

हैं। आन्तरिक शान्ति द्वारा ही आप अत्यन्त विवेकशील एवं बुद्धिमान व्यक्ति बनते हैं। अन्य लोगों से कहीं अधिक महान। सामान्य लोगों जैसे आप नहीं होते।

तत्पश्चात् आप आनन्द प्राप्त करें। किसी चीज़ में आनन्द का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। आनन्द तो आनन्द होता है, न ये प्रसन्नता है न अप्रसन्नता। ये तो मात्र आनन्द है। आप केवल आनन्द में रहें। हर चीज़ का आनन्द लें, सबकी संगति का आनन्द लें, हर घटना का, हर दृश्य का, अपने जीवन की हर घटना का आनन्द लेना सीख लें। देखें, कि केवल आनन्द में ही महान क्षमता है। मुझे याद है कि एक बार मैं अपनी बेटी और दामाद के साथ एक ऐतिहासिक स्थान देखने गई, जिसके लिए हमें काफी सारी चढ़ाई चढ़नी पड़ी। तीन घण्टे तक हम चढ़ाई चढ़ते रहे। जब हम सब थक गए तो तभी संगमरमर से बना हुआ आराम करने का स्थान हमें दिखाई दिया। तो हमने सोचा कि यहाँ पर लेटकर विश्राम कर लें। जब हम वहाँ लेटे हुए थे तो ये सब कहने लगे कि हम लोग यहाँ आए ही क्यों? और इस प्रकार शिकवा करने लगे। और अचानक वहाँ एक आनन्द बिन्दु दिखाई पड़ा। मेरी नज़र संगमरमर में खुदे हुए हाथियों पर पड़ी। मैंने कहा, "क्या आप इन हाथियों को देख सकते हैं? सबकी पूँछ अलग-अलग ढंग से बनाई गई है।" कहने लगे, "मम्मी, हम इतने थके हुए हैं आप किस प्रकार इन हाथियों की पूँछ को देख पा रही हैं?" मैंने कहा, "आप भी इसे देखो।" केवल आनन्द ही आपके मस्तिष्क को व्यर्थ की चीज़ों से हटा सकता है। केवल

अपना मस्तिष्क वहाँ से हटा लें। ये विधि आप आजमा सकते हैं। किसी भी आनन्ददायी चीज़ पर अपना मस्तिष्क ले जाएं। मान लो कोई व्यक्ति अत्यन्त उबाऊ है तो इसके पीछे छिपी हुई विनोदशीलता को आप देखें कि कोई भी व्यक्ति उबाता किस प्रकार है। इससे आपको शिक्षा मिलती है कि कभी किसी को ऊबाना नहीं है। इसी प्रकार आनन्द की भी विशेषता यही है कि यह आपको हर चीज़ का आनन्द, हर चीज़ का सारतत्व सिखाता है। यदि कोई व्यक्ति या वस्तु बुरी है तो भी आप इसका आनन्द लें, कहें कि यह कितना बुरा है? मान लो कोई अच्छा दोस्त है तो आप हमेशा उसकी अच्छाई को देख सकते हैं। परन्तु कभी किसी की बुराई की आलोचना करने की न सोचें। आलोचनात्मक रवैया आपके मस्तिष्क से निकल जाता है। इस स्थिति में किसी भी अटपटी चीज़ को आप देखते हैं तो एकदम आपका मस्तिष्क इससे हटकर किसी अच्छी चीज़ पर चला जाता है। अतः न तो आलोचना करें और न ही इसका बुरा मानें। कभी-कभी तो लोग हैरान होते हैं कि मैं किस प्रकार लोगों को सहन करती हूँ। मैं सहन नहीं करती। कोई व्यक्ति कुछ भी करता रहे मैं उसकी ओर ध्यान ही नहीं देती। आपका स्वभाव तथा संस्कार यदि ऐसे हो जाते हैं जहाँ आप पूर्ण तुर्या स्थिति में हों, जिसके विषय में कबीर साहब ने कहा है 'जब मस्त हुए तो फिर क्या बोलें'। मस्ती के आलम में बोलने को कुछ रह ही नहीं जाता। आनन्द की स्थिति भी ऐसी ही है। एक ऐसा स्वभाव जिसे आपको समझना है और जिसका आपको सम्मान करना

है। यह अन्तःस्थित है। इसका सम्मान करें इसकी तुलना दूसरे लोगों से न करें। अन्य लोग आपके स्तर पर नहीं हैं। आप भिन्न स्तर पर हैं। अतः आनन्द लेने का प्रयत्न करें। कभी ये न सोचें आप कुछ महान हैं कुछ ऊँचे हैं नहीं, कभी ऐसा न सोचें। केवल आभार मानें कि आप जीवन के इन अटपटे विचार एवं शैलियों से बचे हुए हैं। ऐसी शैली एवं विचारों से जहाँ व्यक्ति सदैव आलोचना ही करता रहता है कि यह अच्छा नहीं है, मुझे ये पसन्द नहीं है, ये कहने वाले आप कौन होते हैं कि मुझे पसन्द नहीं है? आप तो स्वयं को भी नहीं पहचानते। जब आप कहते हैं कि मुझे ये पसन्द नहीं है तो मतलब ये कि आप स्वयं को नहीं पहचानते।

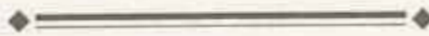
किस प्रकार आप कहते हैं कि मुझे ये पसन्द नहीं है। बहुत कम ज्ञान वाले लोगों को मैंने दूसरों की आलोचना करते हुए देखा है। मेरी समझ में इसका कारण नहीं आता। ऐसा क्यों है? सम्भवतः वह अपने आपको बहुत कुछ समझते हैं। यह बात आम है। परन्तु जब आप पूर्ण ज्ञान को जान जाएंगे तो वास्तव में विनम्र हो जाएंगे। पूर्णतः विनम्र, भद्र या सुहृदय।

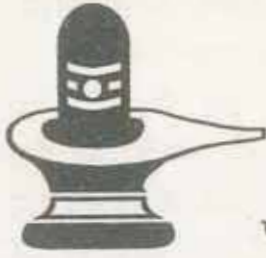
आज वैसे भी मेरे लिए बहुत ही महान दिन है। मैं नहीं जानती कि इस सुन्दर विश्व को देखने के लिए मैं और कितने वर्ष तक जीवित रहूँगी। मानवीय स्तर पर यदि देखा जाए तो मेरा जीवन बहुत संघर्षमय एवं कठोर रहा। परन्तु सहजयोगियों का सृजन, उनकी बातों को सुनना और उनसे बातचीत करना मेरे लिए आनन्ददायी था। वे कितने मधुर, करुणा एवं सम्मानमय हैं?

आपके इन गुणों ने मेरी बहुत सहायता की और इसके लिए मैं आपके प्रति आभार प्रकट करती हूँ। आपके प्रोत्साहन, आपकी सहायता और आपकी सूझ-बूझ से मैं ये सब कार्य सम्पन्न कर सकी। मैं स्वयं यदि इस कार्य को कर सकती तो कभी भी आपकी सहायता न माँगती। परन्तु आप लोग तो मेरे चक्षुओं और बाजुओं जैसे हैं। मुझे आप सबकी बहुत जरूरत है क्योंकि मैं आपके बिना यह कार्य नहीं कर सकती। ये तो माध्यम बनाने जैसा है आपके यदि माध्यम ही नहीं हैं, आपकी यदि धाराएं ही नहीं हैं तो आदि शक्ति होने का क्या लाभ है? किस प्रकार से आप शक्ति प्रवाह करेंगे? विद्युत शक्ति यदि है तो इसको प्रसारित करने के लिए तार भी होने चाहिए। बिना इनके तो यह निश्चल है। इसी प्रकार मुझे भी लगा कि मेरे भी अधिक से अधिक माध्यम होने चाहिए

और ये बात ठीक साबित हुई। मैं वास्तव में बहुत प्रसन्न हूँ। आज के इस शुभ दिवस तक पहुँचने के लिए आप सबको बहुत धन्यवादी हूँ और आप सबको हृदय से आशीर्वाद देती हूँ कि आप इसकी जिम्मेदारी सम्भाल लें। आप सहजयोगी हैं तथा अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना आपकी जिम्मेदारी है। अन्य लोगों को भी यह दिया जाना आवश्यक है। सहजयोग का वर्णन आप उनके सम्मुख कर सकते हैं। उनसे इनकी बातचीत कर सकते हैं और उन्हें समझ सकते हैं। अन्य लोगों को समझने का प्रयत्न करें और उनसे बातचीत करें। लोगों को आत्मसाक्षात्कार अवश्य दें अन्यथा आप स्वयं को भी अपूर्ण महसूस करेंगे। स्वयं को पूर्ण करने के लिए ये कार्य आप करें।

परमात्मा आपको धन्य करें।





शिवरात्रि पूजा

5.3.2000 पुणे

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन



पहले मैं अंग्रेजी में बोलूंगी क्योंकि यहाँ विदेशों से और विशेष रूप से मद्रास, हैदराबाद, कोरल और बेंगलोर से लोग आए हुए हैं। ये सभी लोग तो यहाँ आए हुए हैं ही, इनके अतिरिक्त मैं नहीं जानती कि दक्षिण भारत से कौन से लोग आए हैं जो अभी तक हिन्दी भाषा नहीं समझते। मेरे विचार से इस शिवरात्रि का विशेष महत्व है क्योंकि प्रातः उठकर कोई भी समाचार पत्र यदि आप पढ़ें तो सभी प्रकार के हिंसात्मक, भ्रष्ट कार्य करने वाले तथा चरित्रहीन लोगों के विषय में भयानक खबरें भरी होती हैं। आपको हैरानी होती है कि किस प्रकार आज हमारे चहुँ ओर अपराध वृत्ति फैली हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि श्री शिव के ताण्डव नृत्य का यही समय है। इसके बिना कोई सुधार होता हुआ नहीं प्रतीत होता। उनके क्रोध का प्रकोप यदि इस प्रकार के चरित्र कं लोगों पर होने लगा तो मेरी समझ में नहीं आता कि उससे कोई कैसे बच सकेगा। वे ऐसे देवता हैं जो प्रेम एवं गहन करुणा से परिपूर्ण हैं। परन्तु, उनकी दूसरी विशेषता उनकी विनाश शक्ति है। वे पूरे विश्व को नष्ट कर सकते हैं। उन्हें यदि क्रोध आ जाए तो जीव जंगम सभी को समाप्त कर सकते हैं। आप सबने वह कहानी सुनी होगी कि किस प्रकार वे क्रोधातिरेक में बह गए। एक राक्षस ने शिशु रूप धारण कर लिया

और माँ (आदिशक्ति) बच्चे का वध नहीं कर सकती। देवी ने सोचा कि यदि शिव ने इस राक्षस को देख लिया, पूरा विश्व नष्ट करते हुए देख लिया, तो वे भी उनके क्रोध से न बच सकेंगी। अतः देवी ने राक्षस रूपी उस बालक का वध करने के उस कार्य से स्वयं को हटा लिया और श्री शिव ने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया। बालक रूपी उस राक्षस की पीठ पर वे सवार हो गए और उसका वध कर दिया। वह शिशु क्योंकि राक्षस था इसलिए श्री शिव ने उसका वध करके विश्व को विनाश से बचा लिया और खुशी से नाचने लगे। इसी का नाम दिव्यानन्द है। बहुत से लोग इस बात को नहीं जानते कि श्री शिव उस शिशु की पीठ पर चढ़कर क्यों खड़े हो गए? इसका वास्तविक कारण उसका राक्षस होना था। अतः आजकल लोग चाहे शिशु रूप में अबोध व्यक्ति था पावन गुरुओं का छलावरण धारण कर लें श्री शिव उन्हें समाप्त कर सकते हैं। बहुत सी घटनाओं के माध्यम से सर्वत्र यह विनाश शुरू हो चुका है। भयंकर तूफान, भूचाल और दुर्घटनाएँ तथा प्राकृतिक प्रकोप इस कार्य को कर रहे हैं और यह सब कलकी अवतार के परिणाम स्वरूप है। परन्तु यह अवतार एक अन्य कार्य भी कर रहा है, वह है, लोगों को आत्मसाक्षात्कार (पुनर्जन्म)

देना। आत्मसाक्षात्कारी लोगों को कभी यह घटनाएं कभी हानि नहीं पहुंचाती। इन लोगों को कुछ नहीं हो सकता। सदैव उनकी रक्षा होगी और उनकी हर चीज की रक्षा होगी क्योंकि ये अपनी माँ की सुरक्षा में हैं।

अब समस्या यह है कि इन लोगों 'से सहजयोगी कैसे व्यवहार करें ताकि ये लोग विकास प्रक्रिया के मार्ग में बाधाएं न उत्पन्न कर सकें। इसका एक मात्र समाधान कुण्डलिनी की जागृति है। यदि किसी बुरे से बुरे व्यक्ति की कुण्डलिनी भी आप उठा देंगे तो या तो वह नष्ट हो जाएगा या भला व्यक्ति बन जाएगा। कुण्डलिनी जागृति के पश्चात् सभी दुष्कर्मों की योजना जो उनके मस्तिष्क में है वे त्याग देंगे और वास्तव में बहुत अच्छे लोग बन जाएंगे। हो सकता है कि कुछ मामलों में ऐसा न हो। मैं नहीं कहती कि हर व्यक्ति के साथ सहजयोग सफल हो जाएगा। परन्तु सहजयोगी यदि ध्यान करें, पूर्ण शान्ति की अवस्था में पूरी तरह से समर्पित होकर बने रहें तो उन्हें कुछ नहीं हो सकता। सदैव उनकी रक्षा की जाती है और आप सब लोगों ने इस सुरक्षा को अनुभव किया है। परन्तु सर्वप्रथम आपको स्वयं पर विश्वास करना होगा और सहजयोग के प्रति पूर्णतः समर्पित होना होगा। यहाँ पर उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिमी भारत तथा भिन्न देशों से आए बहुत से सहजयोगी बैठे हुए हैं। हर देश, हम कह सकते हैं आज इन आसुरी शक्तियों के चंगुल में है। हमें कुण्डलिनी जागृति के माध्यम से इन लोगों को श्रेष्ठ बनाना है। यह कार्य आप कर सकते हैं। आप इस कार्य को कर सकते हैं

और इसके लिए कोई विशेष परिश्रम आपको नहीं करना पड़ता। अपने रोजमर्रा के जीवन में आप यह कार्य कर सकते हैं। लोगों का अन्तर्परिवर्तन करने के लिए केवल इसी चीज की आवश्यकता है और आप सब इसको कर सकते हैं। आप सब। ये उपलब्धि आप प्राप्त कर सकते हैं। आप सबको यह कार्य अत्यन्त निष्ठा से भली-भांति करना चाहिए। क्रोध में आकर लोगों पर उछलने की या अभद्र व्यवहार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। शान्त रहते हुए इस उपलब्धि को प्राप्त करना चाहिए। ताकि श्री शिव का क्रोध न भड़क उठे और जैसे कहते हैं, उनकी तीसरी आँख न खुल जाए। ऐसा होना बहुत भयानक है। हम सब इस कार्य को अत्यन्त रचनात्मक तरीके से कर सकते हैं।

अतः सर्वप्रथम हमें अपने शिव तत्व को स्थापित करना चाहिए-आनन्द, प्रेम एवं सत्य के तत्व को। इसमें बहुत सी समस्याएं भी हैं क्योंकि लोग श्री शिव के ब्रह्माण्डीय स्वभाव को नहीं समझते। उदाहरण के रूप में, मैंने सुना है कि लोग शिव तत्व और विष्णु तत्व पर झगड़ते हैं। शिव तत्व तक उठने के लिए आपके पास श्री विष्णु भी हैं और उनकी शक्ति भी है। दोनों भिन्न नहीं हैं, एक दूसरे के संपूरक हैं। फिर भी यदि आप इसी बात पर झगड़ते रहते हैं तो मैं नहीं समझ सकती। श्री विष्णु के बिना आप श्री शिव तक नहीं पहुँच सकते और बिना विष्णु तत्व को समझे आप शिव तत्व पर नहीं बने रह सकते। कुण्डलिनी भी सुषुम्ना मार्ग से उठती है। वह (कुण्डलिनी) शिव का तत्व है और विकास

प्रक्रिया में श्री विष्णु द्वारा बनाए गए मार्ग से वह उठती है। तो किस प्रकार आप दोनों में से एक को बिना चल सकते हैं? एक मार्ग है तो दूसरा लक्ष्य। अतः मैं आशा करती हूँ कि आप लोग इस बात को समझते हैं कि आपके चक्रों का शुद्ध होना और उत्थान मार्ग का ठीक होना कितना महत्वपूर्ण है, तथा आपकी सुषुम्ना नाडी का स्वच्छ होना कितना आवश्यक है? क्योंकि हम मध्यमार्गी हैं हमें मध्य में, मध्य मार्ग से चलना होगा तथा बाएं-दाएं न लुढ़ककर सन्तुलन में रहना होगा। ये सन्तुलन बनाए रखते हुए तब तक हमें कार्य करते रहना होगा, जब तक अपने तालू भाग में नहीं पहुँच जाते जहाँ सदाशिव विराजमान हैं। जो कुछ मैं आपको बता रही हूँ आप इसे स्वयं देख सकते हैं। इसे भली-भाँति जान लें। जब मैं आपको ये चीज़ बता रही हूँ तो आप इसकी

सच्चाई को परख लें। सहजयोग को अत्यन्त सुगमता से सत्यापित किया जा सकता है और आप केवल सत्य को जानते हैं, वह सत्य जो पूर्ण है। यह ऐसा तत्व है जो इन दोनों शक्तियों की एकाकारिता के पश्चात् प्राप्त होता है। अत्यन्त हैरानी की बात है कि जब ये दोनों शक्तियाँ मिलती हैं या जब आप विष्णु तत्व के माध्यम से शिव तत्व में पहुँचते हैं तब आप समझ पाते हैं कि ये दोनों शक्तियाँ एक दूसरे के संपूरक हैं और परस्पर सम्बन्धित हैं। एक प्रकार से इन दोनों शक्तियों में कोई अन्तर नहीं है। अतः अपनी सड़क-मध्य मार्ग को स्वच्छ रखें और कुण्डलिनी को इस मार्ग से गुजरने दें। इस मार्ग से जब कुण्डलिनी गुजरेगी तो आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे कि एक ही कुण्डलिनी विष्णु मार्ग से गुजरती हुई श्री शिव के चरण कमलों में पहुँच रही है।

परमात्मा आपको धन्य करें।





शिवरात्रि पूजा

5.3.2000

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का हिन्दी प्रवचन



शिवजी को आप लोग मानते हैं और उनकी बड़ी पूजा अर्चना होती है। लेकिन शिवजी के गुणधर्म आप जानते नहीं, इसलिए बहुत बार आपसे गलती हां जाती है। शिवजी का विशेष स्वरूप जो है वो आनंद स्वरूप है। सूक्ष्म से सूक्ष्म ये आनंद उनका सब तरफ छाया रहता है। लेकिन उसको आकलन करने की शक्ति जब तक आपमें नहीं आएगी आप उसे देख नहीं पाएंगे और समझ नहीं पाएंगे। वो हर चीज में विराजमान है। हर चीज में एक तरह से आनंदमय, कहना चाहिए कि एक आनंदमय सृष्टि तैयार करते हैं और उस सृष्टि में विचरण करते हुए आप देखते हैं कि आप भी कुछ और ही हो गए। दूसरे लोगों को जिस चीज में आनंद आता है, बहुत से लोगों को अपने को नष्ट करने में ही आनंद आता है। उसको तरह-2 से गलत रास्ते में ले जा कर लोग सोचते हैं कि गर हम आत्मा के विरोध में चले तो हमें बड़ा सुख मिल जाएगा। लेकिन आत्मा जो स्वयं साक्षात् शिवजी है, उनका आनंद एक और तरह का है और वो ही हमारे हृदय को छू सकता है। जैसे बहुत से लोग हैं, दुनिया भर की चीजों में डूबे रहते हैं। कोई है शराब पियेंगे, कुछ और अनीति का कार्य करेंगे। गलत सलत काम करते रहेंगे। उसी में वो सोचते हैं कि बड़ा सुख है। किन्तु है नहीं।

धीरे-2 वो नष्ट होते जाते हैं। धीरे-धीरे वो समाप्त होते जाते हैं। पर शिवजी जो हैं ये हमारी सांत्वना करने वाले हैं। हमको शांति देने वाले हैं और हमको आनंद देने वाले हैं। और जब शिवजी की शक्ति और विष्णु की शक्ति जैसे कि कुण्डलिनी और सुषुम्ना नाड़ी, इन दोनों का मेल हो जाता है तब आपको केवल सत्य मिलता है। केवल सत्या जैसे की उस सत्य को कोई आप किसी भी तरह से अस्वीकार्य नहीं कर सकते क्योंकि वो पूर्णतया सत्य है। आप अपने अंगुलियों पर अपने हाथ पर भी उसे जान सकते हैं। अनेक तरह के अनुभव आपको आएंगे जिससे आप समझ जाएंगे कि एकदम सत्य जो है उसमें असत्य की छटा भी नहीं है। वो आपके अंदर ज्ञात होता है। उसे आप जान सकते हैं। समझ सकते हैं। यही कुण्डलिनी की देन है। यानि कुण्डलिनी जो की शिव की शक्ति है वो जब आपके मध्य मार्ग से उठती है तो सारे ही चक्रों को आड़ोलित करती है, जागृत करती है और समग्र करती है। उस शक्ति को संभालता कौन है? तो कहें कि विष्णु ही संभालते हैं क्योंकि वो विष्णु के मार्ग में चलती है और जा कर के ब्रह्मरंध्र में वो अपने दर्शन देती है। वहाँ पहुँच कर के ज्ञात होता है कि हाँ, अब इसको जो यात्रा थी वो खत्म हो गई। सो आपस में

कितना सहयोग और कितनी समझदारी है। हम लोगों में आजकल एक बीमारी हो गई कि सब लोग जो हैं पैसे के पीछे दौड़ रहे हैं। पैसे के पीछे दौड़ने की बड़ी अजीब सी बीमारी हो गई है और उसके लिए हम कुछ भी कर सकते हैं। किसी भी चीज़ का अवलंबन करते हैं। सहज योग में भी कुछ लोग ऐसे हैं। इसका कारण ये है कि हमारे अंदर विकृति आ गई है। हमारे अंदर बहुत सारी विकृतियाँ आ गई हैं और इस विकृति की सफाई सिर्फ कुण्डलिनी ही कर सकती है। पर अगर आप पूरी तरह से इस कुण्डलिनी को आत्मसात नहीं करते हैं, ध्यान धारणा से उसका उत्थान पूरा नहीं करते तो आप उस दशा में पहुँच नहीं सकते जहाँ आपके अंदर से प्रकटित जो शक्ति है वो सत्य, आनंदमय, शांतिमय हो। उसमें दोष रह जाता है। जब कुण्डलिनी उठती है तो वो सब सफाई करती है। शिवजी की शक्ति से पूरी चीज़ साफ होती जाती है। तो भी कुछ लोग अपनी पुरानी आदतों से या अपनी गलत धारणाओं से पीड़ित होते हैं और वो लोग जो कुछ गलत, जो भी दुष्ट बुरी बातें हैं उसके थोड़े से ही प्रलोभन में पड़ के फिर से गिर जाते हैं। वो हमारे अंदर एक छोटी सी भी अणु रेणु मात्र भी गर खराबी अंदर बची हो तो उसमें गिर करके हम वास्तव में नष्ट हो जाते हैं। जो पूजा में आए और ध्यान करें उन लोगों में हमेशा प्रगति होती है। गर शांति न हो तो कोई पेड़ भी नहीं बच सकता। कोई वो बढ़ नहीं सकता। कोई अंकुर भी नहीं चल सकता। इसीलिए अगर आपके अंदर ये पूरा ध्येय न हो, ये आदर्श न हो कि हम कहीं भी चैतन्य लहरी ■ खंड : XII अंक : 9 & 10, 2000

पतन की ओर नहीं जाएँगे, किसी भी गलत चीज़ में हम नहीं पड़ेंगे तो आपको सारी पूजाओं में जहाँ तक हो सके आना चाहिए। और आपको ध्यान करना चाहिए। तब आप पूजा के अधिकारी हैं। सब लोग पूजा के अधिकारी नहीं होते। जो दंखो पूजा करने निकल जाता है। गर आपका संबंध ही नहीं हुआ है तो आप क्या पूजा के अधिकारी बन सकते हैं? लेकिन बहुत से लोग सोचते हैं इस मंदिर में दौड़, उस मंदिर में दौड़ इस गुरु के पास जा, उस के पास...इससे कुछ नहीं होता। आप स्वयं ही अपने गुरु हैं और आप अपने को देखिए कि हमारे अंदर क्या खराबी है। क्या हम अपने हृदय से पूरी तरह से सहजयोग को अपनाते हैं या नहीं। मैं देखती हूँ, बहुत से लोग सहजयोग में आते हैं और एक स्थान पर जा कर गिर जाते हैं, और जितने ऊँचे उठते हैं उतने गहरे गिर जाते हैं। इसकी वजह ये है कि आपके अंदर जो छिपी प्रवृत्तियाँ हैं वो किसी तरह से कार्यान्वित हो गई और आपको अंदाज ही नहीं रहा। इसलिए अपनी ओर ध्यान रखना चाहिए कि हम कोई ऐसे गलत झंझट में तो नहीं फँस रहे हैं, कहीं हम ऐसा काम तो नहीं कर रहे हैं कि जो असहज हो। या कोई हमारे अंदर ऐसी गंदी प्रवृत्तियाँ तो नहीं आ रही कि हम पैसा कमाने के लिए सहज में आएँ या कोई और गंदे काम करने के लिए सहज में आएँ। इसके ओर अपनी दृष्टि होनी चाहिए। सबसे अच्छा है कि सहज के जो कार्यक्रम हैं और सहज में जिस तरह भी होता है ध्यान, धारणा आदि करके और आप अपने आपको पक्का एक व्यक्तित्व बनाएँ। आपके अंदर वो

एक विशेष रूप का जिसको कहते हैं कि एक व्यष्टि होती है और एक समष्टि होती है। व्यष्टि बनाएँ आप, तो आप समष्टि में भी एक हो जाएँगे। जो समष्टि में नहीं आते वो व्यष्टि में ठीक नहीं हो सकते। ये मैंने देखा है। जो समष्टि में आते हैं वही ऊँचे उठते हैं। थोड़े दिन के लिए हो सकता है आपको कुछ फायदा हो जाए, कुछ पैसे मिल जाएँ, थोड़े आप ऊँचे उठ जाएँ, कुछ नाम हो जाए, सहज योग में खास करके लोगों में ये बात होती है कि कितने लोगों को हम control करते हैं। वो भी लेकिन हो जाता है। आपका व्यक्तित्व नहीं बढ़ा। इसमें वो गहनता नहीं आई। आप वो ऊँचे दर्जे के सहज योगी नहीं हैं। जब तक आप वो नहीं हैं तब तक अपनी सब बातें बेकार हैं क्योंकि न जाने कब आप कगार से गिर जाएँ, न जाने कब आपका सर्वनाश हो जाए। इसलिए बच के रहना चाहिए और अपने को उस उच्चतर व्यक्तित्व में उसकी ओर एक चीज़ आपको करनी चाहिए। गर आज आप पार हैं तो कल हजारों लोगों को पार कराइए तो आपकी शक्ति बढ़ेगी। नहीं तो जो थोड़ा सा पाया भी है वह भी खत्म हो जाएगा। ये बड़ा विचित्र सा एक नियम है। ऐसे किसी भी और चीज़ से इसकी तुलना नहीं हो सकती जैसे अगर एक दीप जलाइए और उससे दूसरे दीप जलाएँ तो भी यह नहीं कह सकते कि इस दीप की दीप्ति बढ़ जाएगी। नहीं कह सकते। पर सहज योग में मैंने देखा है जो जितने

दिल खोल करके और प्रेमपूर्वक सहजयोग का वरण करता है, इतना ही नहीं और दूसरों में जागृति करता है क्योंकि आपको सहजयोगी इसीलिए बनाया गया है कि आप सारे संसार में परिवर्तन लाएँ। सारे संसार में एक हलचल मचा करके एक ऐसा सुन्दर संसार बनाएँ। ऐसा अभिनव और विशेष ऐसा संसार बनना चाहिए। ये एक आपकी शुद्ध इच्छा होनी चाहिए। ये शुद्ध इच्छा होते ही आपकी कुण्डलिनी कार्य-प्रबल होने लगती है। बहुत सर्व साधारण लोग भी जब अपने अनुभव बताते हैं तो बहुत आश्चर्य लगता है कि ये इनके अंदर कैसे बात आ गई, ये इन्होंने कैसे जाना। सहजयोग में भी कुछ ऐसे लोग आ जाते हैं जो सत्ता के लिए आते हैं। कुछ आते हैं वो पैसे के लिए आते हैं। इन सब चीज़ों से मनुष्य का व्यक्तित्व बढ़ता नहीं। उसके व्यक्तित्व में वो चमक नहीं आती क्योंकि जो प्रकाश आपको मिला है वो जब तक लोगों में आप बाँटेंगे नहीं और स्वयं अपने में भी आप प्रकाशित नहीं रहेंगे तब तक कोई सा भी कार्य संपन्न नहीं हो सकता। मतलब ये है कि कार्य यही है कि संसार को बदलना है, इस दुनिया को बदलना है, इसमें एक विशेष दुनिया बनानी है। और आप लोग एक विशेष लोग हैं। जब ये चीज़ आपके ध्यान में आएगी कि कितने आप महत्वपूर्ण हैं तो फिर आप बहुत समझ से अपने जीवन को बनाएँगे।

अनन्त आशीर्वाद



परम पूज्य माताजी श्री निर्मलादेवी का
भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारियों
 के सम्मुख प्रवचन

8.4.2000

सभी सत्य साधकों को मेरा प्रणाम। जैसा कहा जाता है आजकल घोर कलियुग है और सभी प्रकार के भयानक कृत्य हम देख सकते हैं और समाचार पत्रों में पढ़ सकते हैं। यह वास्तविकता है कि हम बहुत भयानक समय में से गुजर रहे हैं। चहुँ ओर बहुत ही घटिया दर्जे के लोग हैं जिनकी मूल्य प्रणाली अत्यन्त निकृष्ट है। परन्तु बहुत समय पूर्व भविष्यवाणी की गई थी कि यही समय है जब हिमालय की पहाड़ियां तथा दर्रा-कन्दराओं में साधना रत साधक सत्य को प्राप्त कर सकेंगे। इस बात का वर्णन बहुत से महान ज्योतिषियों और सन्तों ने किया है। अतः एक प्रकार से हम सौभाग्यशाली वातावरण में रह रहे हैं। मैं कहना चाहूंगी कि भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा तथा सभी लोक सेवाओं में कार्यरत अधिकारियों से मुझे अत्यन्त प्रेम है क्योंकि मैं जानती हूँ कि उन्हें क्या-क्या सहना पड़ता है। उनका जीवन महान उथल-पुथल पूर्ण है तथा उनकी पत्नियों को भी बहुत कुछ बलिदान करना पड़ता है। परन्तु मुझे सदैव ऐसा प्रतीत हुआ मानो यह जीवन युद्ध में लड़ते हुए एक सिपाही का जीवन हो। हम लोग यहां देश का निर्माण करने के लिए हैं। मेरे पति पहले विदेश सेवाओं में अधिकारी थे। मैंने कभी इन

सेवाओं आदि के बारे में न सुना था। तो मैंने पूछा कि यह विदेश सेवाएं क्या होती हैं? साथ ही साथ मैंने यह भी कहा कि मैं बाहर किसी भी देश में नहीं जाने वाली। हाल ही में हम स्वतन्त्र हुए हैं और हमें कार्य करना है। इस देश के लिए हमें बहुत सा कार्य करना है। केवल इतना ही नहीं मैंने यह भी महसूस किया कि लोक सेवाएं देश की रीढ़ हैं। इन्हीं को सारा झटका झेलना पड़ता है, सारे कष्ट उठाने पड़ते हैं और सारे बोझ उठाने पड़ते हैं। परन्तु देश का निर्माण करने का महान उत्तरदायित्व इन्हीं का है। इसीलिए मैंने अपना पूरा जोर लगा दिया कि मेरे पति किसी तरह भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में चुने जाएं। इसके लिए हमें बहुत से धन का नुकसान उठाना पड़ा, आदि आदि। मैंने कहा ठीक है किसी भी स्थिति में मैं निर्वाह कर सकती हूँ परन्तु विदेश में रहकर वहाँ अपनी शक्ति को नष्ट करना मुझे ठीक नहीं लगा। हमारे यहाँ रहने के लिए यही समय बहुमूल्य है। इसी देशभक्ति की भावना के कारण ही अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए और यह समझते हुए कि इस देश की सरकार के सशक्त आधार हम लोग हैं हम लोक सेवा में लगे रह सकते हैं। यद्यपि भिन्न राजनैतिक दल देश की सरकार को चलाते हैं

फिर भी जनता की भिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान लोक सेवा अधिकारियों के माध्यम से ही होता है। मैंने सीखा कि लोक सेवा के जीवन में महिलाओं को अत्यन्त सहनशील, त्यागशील तथा प्रसन्नचित्त होना पड़ता है। हम इस सेवा में रत क्यों हैं? यह इस बात को दर्शाता है। निःसन्देह हम लोग विशेष हैं और हमारे पास विशेष शक्तियाँ हैं। परन्तु बिना इन शक्तियों का दुरुपयोग किए आप क्या हैं? कुछ नहीं। इन शक्तियों का दुरुपयोग यदि आप करते हैं तो यह अनुचित है और यदि इनका उपयोग नहीं करते तो आप शक्तिहीन हैं। वास्तव में यही स्थिति है।

परन्तु आनन्द, प्रसन्नता तथा सन्तोष का स्रोत, तो केवल यह सत्य है कि आप अपने देश के लिए कार्य कर रहे हैं। देश भक्ति की यह भावना जो मैंने अपने माता पिता और महात्मा गांधी से प्राप्त की थी उसके कारण मुझे लगा कि हम सबका कर्तव्य है कि इस प्रकार कार्य करें जो कि यह अत्यन्त रचनात्मक और सहायक हो। कठिन परिस्थितियों के कारण इस प्रकार के कार्य करते हुए हमारे सम्मुख बहुत सी समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। मैं आपसे इन्हीं के बारे में बात करने वाली हूँ।

किसी भी चीज़ को जब हम देखते हैं तो हम प्रतिक्रिया करते हैं। यह प्रतिक्रिया हमारे अन्दर दो प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न कर सकती है एक बन्धन (conditioning) की और दूसरी अहम् (Ego) की। दोनों ही स्थितियाँ अत्यन्त कष्टकर हैं और हमें अत्यन्त अधीर और तनावमय

करती है। मुख्य बात यह है कि हम नहीं जानते कि सोचने तथा भविष्य की योजनाओं आदि के लिए आवश्यक ऊर्जा कहाँ से आती है। सहजयोग के अनुसार शरीर के अन्तः स्थित एक सूक्ष्म चक्र ही इस ऊर्जा का चक्र है और यही चक्र हर समय खर्च होने वाले मस्तिष्क कोषाणुओं की सृष्टि करता है। हर समय हम अपने मस्तिष्क पर जोर डाले रखते हैं और हर समय इसकी शक्ति का उपयोग करते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि किस प्रकार इस शक्ति की कमी को दूर किया जा सकता है तथा यह कार्य केवल एक चक्र (दायाँ स्वाधिष्ठान) करता है। यही चक्र शरीर के बहुत से अन्य अवयवों की देखभाल करता है। इस शक्ति का मस्तिष्क की ओर भविष्यवादी जीवन के लिए अनियन्त्रित बहाव बहुत सी समस्याएँ खड़ी कर सकता है। न केवल तनाव परन्तु बहुत सी अन्य समस्याएँ भी क्योंकि इस प्रकार के बहाव के कारण यह ऊर्जा समाप्त होने लगती है और जब हम संघर्ष की स्थिति में होते हैं तो यह शक्ति एक प्रकार से समाप्त होने लगती है और इस कारण हमारे अन्दर भयानक असन्तुलन उत्पन्न हो सकते हैं। सामने लगे शरीर यन्त्र के नक्शे पर आप स्पष्ट देख सकते हैं कि हमारे स्वचालित नाड़ी तन्त्र के तीन मार्ग हैं। हम या तो बाईं ओर होते हैं या दाईं ओर। प्रायः हम मध्य में नहीं रह पाते। आप यदि बहुत अधिक भविष्यवादी हैं बहुत अधिक सोचते हैं, बहुत अधिक कार्य करते हैं तो आक्रामक (Right Sided) हो जाते हैं। और यह समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है कि ऐसी स्थिति में

हम अपना सन्तुलन खोने लगते हैं।

पहली हानि जो व्यक्ति को होती है वह यह है कि उसका जिगर (Liver) खराब हो जाता है। यही चक्र क्योंकि लिवर को भी देखभाल करने वाला है इसलिए उस व्यक्ति का जिगर अनियन्त्रित हो जाता है। जिगर में उत्पन्न होने वाली गर्मी ऊपर को जाने लगती है इसलिए आदमी को दमा रोग हो सकता है, बहुत भयंकर प्रकार का रोग जिसके लिए कहा जाता है कि यह लाइलाज है। परन्तु इसका इलाज हो सकता है। प्रभावित व्यक्ति को यदि आप सन्तुलित कर लें तो आसानी से दमा रोग ठीक किया जा सकता है। जिगर को गर्मी यदि ऊपर को जाने से यदि दमा नहीं होता तो यह गर्मी हृदय को प्रभावित करती है। किसी व्यक्ति का हृदय यदि जन्म से ही खराब हो तो वह बात तो समझ में आती है परन्तु 21-22 वर्ष के मद्यपान करने वाले जवान टेनिस खिलाड़ी को जान लेवा हृदयाघात हो जाना समझ में नहीं आता। शनैः शनैः इसी प्रकार से कार्यरत रहना गहन हृदयाघात की ओर ले जा सकता है। ऐसा किसी भी व्यक्ति के साथ हो सकता है। परन्तु जब वृद्धावस्था आरम्भ होती है तो यह विशेष रूप से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है। तो यह एक आम रोग है। जब हृदय रोग हो जाता है तो व्यक्ति गति निर्धारक यन्त्र आदि लगवाने में लगा रहता है। इसकी अपेक्षा यदि आप सहजयोग को अपना लें तो आपको अपने हृदय की चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी। हृदय बहुत ही अच्छी स्थिति में रहेगा।

जब व्यक्ति बहुत अधिक दाईं ओर को रहता है तो उसके मस्तिष्क के बाएं हिस्से में होने वाले दुष्प्रभाव के कारण इसे पैरिफेरिया रोग हो सकता है जिसमें उसके हाथ और टांगे भी बिल्कुल मृतसम हो सकती हैं। ऐसे व्यक्ति को गम्भीर पक्षाघात भी हो सकता है जिसके कारण उसके शरीर का पूरा दायीं हाथ प्रभावित हो सकता है—मुँह के क्षेत्र से लेकर हाथ, टांगे और सभी अवयव क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। अपने को सन्तुलित करने की चिन्ता न करने वाले लोगों की यह रोग भी प्रतीक्षा करता है। यह सब शरीर के ऊपर के हिस्से के गम्भीर रोग हैं। शरीर के नीचे के हिस्से में, जब यह गर्मी अग्नाशय की ओर बढ़ती है तो इसे अशक्त करके शक्कर रोग का कारण बनती है। तत्पश्चात् थोड़ी सी और नीचे प्लीहा को प्रभावित करती है और व्यक्ति को रक्त कैंसर भी हो सकता है। सहजयोग द्वारा निसन्देह रक्त कैंसर ठीक हुआ है। रक्त कैंसर ठीक किया जा सकता है। इसके पश्चात् जिगर से निकली हुई यह गर्मी गुर्दों की समस्या उत्पन्न करती है। गुर्दे बुरी तरह से प्रभावित हो जाते हैं और व्यक्ति इनके प्रतिरोपण (Transplantation) की कोशिश करता है, परन्तु इससे भी कोई अधिक लाभ नहीं होता। यही गर्मी यदि आपके उदर को प्रभावित कर दें तो आप कब्ज रोग के शिकार हो जाते हैं और सदैव गुस्से से भरे रहते हैं। दाईं ओर के, आक्रामक व्यक्ति को यह सब रोग हो सकते हैं और कोई उसकी सहायता भी नहीं कर पाता क्योंकि हर समय वह योजनाएं बनाने तथा बौद्धिक कार्यों को करने में ही व्यस्त

होता है। उसके मस्तिष्क को बिल्कुल आराम नहीं होता। परिणामस्वरूप वह चिड़चिड़ा हो जाता है और अपनी इच्छा के विरुद्ध वह बहुत सी बातें कहता है। इन सारी चीजों से पता चलता है कि दाईं ओर की समस्या बहुत गम्भीर समस्या है जिसका सामना हम सबको करना है। इसका स्रोत आपकी प्रतिक्रिया है। अतः हमारे मस्तिष्क के कारण ही प्रतिक्रियाएं होती हैं। आपका मस्तिष्क यदि प्रतिक्रियाशील है तो इसे प्रतिक्रिया करने से किस प्रकार रोका जा सकता है? आइंस्टाइन बता गए हैं कि सापेक्षता (Relativity) के सिद्धांत की खोज में कार्य करते हुए थक कर वह बगीचे में चले गए और साबुन के बुलबुलों से खेलने लगे। वे कहते हैं कि अचानक किसी अज्ञात स्थान से पूरा वैज्ञानिक वर्णन उनके मस्तिष्क में आ गया। इस स्थान को उन्होंने ऐंठन क्षेत्र (Torsion Area) का नाम दिया। हम सबमें यह ऐंठन क्षेत्र है। जो सूक्ष्म ऊर्जा हमारे चहुँ और है, हमारी देखभाल करती है उसे मैं दिव्य प्रेम कहती हूँ। यह हम स्वयं को सन्तुलित करने में, सम्पन्न करने में और पूर्ण ज्ञान देने में सापेक्ष ज्ञान (Relative Knowledge) में, हमारी हर तरह से सहायता करती है। हम लोग ज्ञान मार्ग की बात कर रहे हैं, पूर्ण ज्ञान की बात। अब यह ऐंठन क्षेत्र (Torsion Area) अद्भुत चीज है। कुण्डलिनी जब उठती है तो यह न केवल इन सभी छह चक्रों का पोषण करती है, यह उन्हें प्रकाश रंजित करती है और उनका समन्वयन करती है, परन्तु यह आपको आइंस्टाइन के ऐंठन क्षेत्र से जोड़ती भी है। आप हैरान हो जाते हैं कि यह

अचानक किस प्रकार यह घटित हो गया! बहुत सी असम्भव समस्याओं के समाधान आपको प्राप्त हो जाते हैं। आपका स्वभाव बदल जाता है। आप अत्यन्त शान्त हो जाते हैं जिसका अर्थ यह है कि आपमें साक्षी अवस्था विकसित हो गई है क्योंकि आप मस्तिष्क से ऊपर उठ चुके हैं। आप प्रतिक्रिया करना बन्द कर देते हैं। चीजों को मात्र देखते हैं और आपका चित्त आश्चर्यजनक रूप से अत्यन्त शक्तिशाली हो जाता है। यह सब चीजें आपमें हैं। केवल सोचें कि हमें थोड़ा सा प्रकाश प्राप्त करना है, योग प्राप्त करना है। मैं यहाँ बोल रही हूँ। इस यन्त्र (माइक) का अपने शक्ति स्रोत से जुड़ा होना आवश्यक है। स्रोत से जुड़े बगैर यह बेकार है। इसी प्रकार हमें भी स्रोत से जुड़ा होना चाहिए। हमें निर्णय करना है कि हमें परमेश्वरी शक्ति से सम्बन्ध बनाना चाहिए। एक बार जब आप उस परमेश्वरी शक्ति से जुड़ जाएंगे तो ऐसा परिवर्तन आएगा कि आपके हाथ बोलने लगेंगे। कुरान में लिखा है कि कयामा के समय आपके हाथ बोलेंगे। अतः मैं कहती हूँ कि मैं केवल मुस्लिम नियमों को मानूंगी कि हाथ बोल रहे हैं अर्थात् अपने हाथों पर, पाँचों अंगुलियों के सिरों पर और दो अन्य बिन्दुओं पर आप अपने चक्रों को महसूस कर सकते हैं तत्पश्चात् दूसरे के चक्रों को भी आप महसूस कर सकते हैं क्योंकि आप सामूहिक मानव बन चुके हैं। अन्य कौन है। सभी को आप अपनी अंगुलियों के सिरों पर महसूस कर सकते हैं। कोई व्यक्ति देखने में ठीक ठाक और सामान्य लगेगा, परन्तु आप महसूस करेंगे कि

वह ठीक नहीं है। उसे कोई भयानक समस्या है। लोगों की समस्या को आप अपनी अंगुलियों के सिरों पर महसूस कर सकेंगे। किसी तरह से यदि आप इस कला में निपुणता प्राप्त कर लें, ज्यादा से ज्यादा एक महीना इस कार्य में लगेगा, तो आप अन्य लोगों की कुण्डलिनी उठा सकते हैं। इसी प्रकार यह लोग कहते हैं कि सहजयोग 86 देशों में फैल चुका है निसन्देह: यह 86 देशों में फैल चुका है, यद्यपि मैं इन सभी देशों में नहीं गई हूँ। इन सब देशों की यात्रा मैंने नहीं की है। अधिक से अधिक 20 देशों में गई होऊंगी। परन्तु इन देशों के जिन लोगों को साक्षात्कार प्राप्त हुआ उन्होंने जगह-2 जाकर अन्य लोगों को साक्षात्कार दिया। अफ्रीका में बैनिन नामक देश है उसमें 7000 सहजयोगी हैं। आप इसकी कल्पना करें। वे सभी मुसलमान थे और सभी को साक्षात्कार प्राप्त हो गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे हिन्दू या मुसलमान नहीं रहे। आत्मसाक्षात्कार के बाद भी आप वही हैं। परन्तु आप जानते हैं कि आपको उस धर्म का सार प्राप्त हो गया है। अतः आप सभी धर्मों, अवतरणों का सम्मान करते हैं क्योंकि अब आपको धर्म के विषय में सच्चा ज्ञान प्राप्त है। अपने विषय में और पूरे ब्रह्माण्ड के विषय में सच्चा ज्ञान प्राप्त है। इसे आप अंगुलियों के सिरों पर महसूस कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में यदि एक आदमी आता है। मेरे पति जब नगर दण्डाधिकारी थे तो दो महिलाएँ पिछले दरवाजे से मेरे पास आईं और कहने लगीं कि पुलिस के यह लोग हमें कष्ट दे रहे हैं। हम अच्छी औरतें हैं। हमने कुछ

नहीं किया है। मैंने केवल उनकी चैतन्य लहरियों को महसूस किया। अपने पति को मैंने बताया कि आप लोग इनके साथ अन्याय कर रहे हैं। वे बिल्कुल ठीक हैं। वे कहने लगे कि तुम दखलंदाजी न करो। मैंने कहा मैं दखलंदाजी नहीं कर रही हूँ, पर मैं साबित कर दूँगी कि यह लड़कियाँ निर्दोष हैं और अबोध और सीधी-सादी हैं। आप बेकार ही इन्हें बुरा समझ रहे हैं। मैं उनके साथ गई। इस समय हमारे पास केवल एक ही कार होती थी तो मैं रिक्शे में बैठकर उस स्थान तक गई जहाँ एक व्यक्ति ने लिखा था कि वे बुरी औरतें हैं। मैंने वहाँ जाकर उससे पूछा कि क्या यही दो लड़कियाँ आपके ऊपर वाले फ्लैट में रहती हैं? क्या इन्होंने ही यह सब किया है? कहने लगा बिल्कुल ही नहीं, वे तो कोई और थीं। यह नहीं थी। वापस आकर मैंने उन्हें (अपने पति को) बताया कि देखो मैंने इन्हें चैतन्य लहरियों पर परखा था और यह बुरी महिलाएँ नहीं हो सकती। तो कभी कभी हम उन लोगों को भी दण्डित करते हैं, उन पर क्रोध करते हैं जो इस प्रकार के व्यवहार के योग्य नहीं होते क्योंकि हम उन्हें समझ नहीं पाते। गलत रास्ते पर भी हम चलते हैं और बहुत सी चीजों में खो जाते हैं क्योंकि हमें ठीक ज्ञान नहीं होता।

अब कुण्डलिनी के उत्थान की घटना के बाद आप शारीरिक रूप से तो ठीक हो जाते हैं। शारीरिक चीजों की आपको चिन्ता नहीं रहती। वास्तव में लोगों के शारीरिक कष्ट दूर करने में कोई परेशानी नहीं है। हमारा एक सहज अस्पताल है जिसमें कमरों के किराए के अतिरिक्त कुछ

भी नहीं लिपा जाता और कमरे भी कभी-2 बहुत अच्छे होते हैं। वहां डाक्टर भी निःशुल्क कार्य करते हैं। इतनी अच्छी तरह से चीजों का कार्यान्वित करते हैं कि बहुत से लोग रोगमुक्त हो चुके हैं। बहुत से लोग विश्वभर से वहां आ रहे हैं। बहुत ही ऊंचे पद के लोग वहां आते हैं और रोग से मुक्ति पा लेते हैं। निःसहाय भावनाओं के साथ-साथ यह सब कार्य नहीं करना होता। उनके रोगों को जानने के लिए रोग निदान के लिए उन्हें नहीं भेजा जाता। आम चिकित्सा प्रणाली में तो रोग निदान करवाते करवाते रोगी आधा मर जाता है। सहजयोग में अंगुलियों के सिरों पर आप जान जाते हैं कि व्यक्ति में क्या कमी है। उसे बताने की कोई आवश्यकता नहीं कि उसमें क्या कमी है। इस कार्य को करने और कार्यान्वित करने का ज्ञान आपको है। आज ही मेरे से आयु में बहुत छोटा मित्र हमें मिलने को आया। वह बहुत ही वृद्ध और जीर्ण दिखाई दे रहा था। उसने बताया कि उसे पक्षाघात हो गया था। मैंने कहा कैसे? वह भी वैसा ही व्यक्ति था जो जरूरत से ज्यादा परिश्रम किया करता था। उसकी कुण्डलिनी उठाने के 20 मिनट पश्चात् उसका चेहरा ठीक हो गया और हाथ ठीक हो गए। कहने लगा कि छड़ी के सहारे के बिना मैं चल नहीं सकता। मैंने कहा ठीक है अब आप छड़ी के बिना चलो, वह चलने लगा। जो लोग पहियों वाली कुर्सियों पर आते हैं मैंने उन्हें दौड़ते हुए देखा है। हैरानी की बात है किस प्रकार यह सब कार्यान्वित होता है! हमें पता होना चाहिए कि यह हमारे देश का ज्ञान

है। ऐसा नहीं है कि अन्य लोगों को इसका पता न था। वे भी इसे जानते थे। बोलीविया में, मैं हैरान थी, जब लोगों ने मुझे चक्रों के विषय में बताया, "हम सभी कुछ जानते हैं परन्तु कुण्डलिनी उठाना हमें नहीं आता"। कुण्डलिनी शब्द का भी उन्हें ज्ञान था। मैंने सोचा कि पता तो लगाऊं कि किसने इन्हें इसके विषय में बताया है। उन्होंने बताया कि बहुत समय पूर्व भारत से दो सन्त यहाँ पर आए थे। मैंने सोचा कि हो सकता है कि मछेन्द्रनाथ और गोरखनाथ यहाँ आए हों। वे यूक्रेन भी गए थे। संभवतः उन्होंने वहाँ के लोगों को कुण्डलिनी और इसकी जागृति के विषय में बताया होगा। परन्तु उन्होंने बताया कि कुण्डलिनी जागृति के विषय में कुछ नहीं जानते। एक बार सहजयोग के विषय में वह ज्ञान प्राप्त हो जाएगा तो आप किसी की भी कुण्डलिनी उठा सकेंगे और उसे रोग मुक्त कर सकेंगे। जहाँ तक शरीर और मस्तिष्क का सम्बन्ध है आप जो चाहें कर सकते हैं। मैंने देखा है कि तनाव मानव का मानसिक विकार है, जिसमें व्यक्ति तनावग्रस्त और क्रोधग्रस्त हो जाता है या बिल्कुल चुप हो जाता है। इस स्थिति को संभालने का आपको पूरा ज्ञान है। आपके मस्तिष्क की प्रतिक्रिया ही इस स्थिति का कारण बनती है। परन्तु आप यदि मस्तिष्क से परे चले जाएं तो, आप हैरान होंगे, आपको आने वाले विचार पूर्ण होंगे और आपको सूझने वाले समाधान भी पूर्ण होंगे तथा आपके विरोधी लोग भी आपके मित्र बन जाएंगे। जो लोग आपको कष्ट दे रहे हैं वे भी आपके प्रति मधुर हो जाएंगे। यह मानव का अन्तर्परिवर्तन

(Transformation) है। उस दिन मेरे पास एक संवाददाता आए जिनका नाम श्री अब्बास था। मेरे प्रति वे अत्यन्त आक्रामक थे। मुझसे उन्होंने अत्यन्त अटपटे प्रश्न पूछे। कहने लगे कि, "आपने कैसे जाना कि आप दिव्य (Divine) हैं?" मैंने कहा, "आपने कैसे जाना कि आप मानव हैं? वह खीझ गए। मैंने कहा देखो मैं दिव्य इसलिए हूँ कि मैं प्रतिक्रिया नहीं करती"। मैं चीजों को देखा करती थी और देखते हुए मैंने पाया कि मैं अन्य लोगों से भिन्न हूँ। परन्तु इन बातों का दिखावा करना मुझे अच्छा नहीं लगता था। इस बात को कोई भी नहीं समझना चाहता। वास्तविकता आपको प्रमाणित करनी पड़ती है। सहजयोग बताने का यही सर्वोत्तम उपाय है। कहने लगा कि किस प्रकार मैं यह प्रमाण पा सकता हूँ। मैंने कहा कि मुझे किसी प्रकार के रूढ़िवाद पर विश्वास नहीं है, किसी भी प्रकार की रूढ़िवादिता पर विश्वास न करें। परन्तु स्वयं पर विश्वास अवश्य करें। कहने लगा निसन्देह। और उसी समय उसकी कुण्डलिनी एकदम से चढ़ गयी। कहने लगा कि मेरी अंगुलियों के सिरों से यह शीतल लहरियाँ कैसे निकल रही हैं? यह सबको दिखाई दे रहा है? मैंने कहा कि इन शीतल लहरियों को आपने तालू भाग पर भी महसूस करो। वह पूर्णतः परिवर्तित हो चुका था। कहने लगा कि जो भी प्रश्न मैंने आपसे पूछे थे मैं उन्हें छापूंगा नहीं। यह सब बेवकूफी थी (हम बेवकूफ थे)। अब मैं विवेकशील मानव बन गया हूँ।

वास्तव में यह कुण्डलिनी परिवर्तन करती

है-अन्तर्परिवर्तन। कहा जाता है कि हमारे षडरिपु हैं-काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर। परन्तु आजकल तो मुझे लगता है कि इनसे भी अधिक रिपु हैं। मान लेते हैं कि यह छः ही हैं। प्रेम की इस परमेश्वरी शक्ति से जब आपका योग हो जाता है तो यह सब चीजें बेकार लगने लगती हैं और छूट जाती हैं। न कोई ईर्ष्या रहती है, न कोई स्पर्धा। हमारे बहुत से लोग विदेश सेवाओं में हैं और वे हमें बताते हैं कि श्रीमाताजी लोग हमसे बहुत प्रसन्न हैं। मैंने पूछा क्यों? क्योंकि हम स्पर्धा नहीं करते। हम सब लोग राजदूत आदि बन रहे हैं पर कोई हमसे नाराज नहीं है क्योंकि हममें स्पर्धा का अभाव है। व्यक्ति जब स्पर्धा के बारे में सोचता है तो गलत मार्ग पर जा सकता है-किसी भी प्रकार की अन्धेरी गलियों में और बिल्कुल भिन्न रास्तों पर। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् आप मध्य में होते हैं और आपमें पूर्ण सन्तुलन होता है और सभी प्रकार की लालसाएं आदि आपको छोड़ देती हैं। व्यर्थ की चीजों के पीछे आप नहीं भटकते फिरते और न ही अपनी शोहरत के पीछे भागे फिरते हैं। स्वतः ही इतने सन्तुलित हो जाते हैं कि चिन्ता ही नहीं रहती कि क्या हो रहा है तथा घटनाओं का भय भी नहीं रहता। उदाहरण के रूप में यदि आप जल में खड़े हों तो आपको लहरों का डर रहता है। परन्तु यदि आप नाव में बैठ जाएं तो आप लहरों का आनन्द भी ले सकते हैं। किन्तु यदि आप तैरना सीख ले तो जल में कूदकर आप लोगों को बचा भी सकते हैं। इसी प्रकार सहज ढंग से सहजयोग कार्य करता है। जैसा मैंने कहा आप

लोगों का मुझे बहुत ध्यान रहता है, सदैव से था," परन्तु मेरे पति के कठोर नियमों के कारण, कि उनके दफ्तर के लोगों को न छुआ जाए, मैं न तो उनसे मिल सकी और न बातचीत कर सकी। किसी चपरासी से भी नहीं, आई.ए.एस. की तो बात ही कुछ और थी। मैंने कहा ठीक है मैं कोई ओर क्षेत्र चुन लूंगी। परन्तु सौभाग्य से वे अब सेवानिवृत्त हो गए हैं और आश्चर्यजनक रूप से मैं अब आप लोगों से बातचीत करने को स्वतन्त्र हूँ। अन्यथा वे मुझे कभी आपसे बातचीत करने की आज्ञा न देते। उनका कहना था कि सदैव दूरी बनाकर रखना आवश्यक है। पार्टियों आदि में जाकर भी लोगों को चीजों के प्रति वाद विवाद करते देख मैं मुस्कराती थी और चुप रहती थी। इसलिए लोगों ने सोचा कि संभवतः मैं अंग्रेजी भाषा नहीं जानती या अपनी अज्ञानता के कारण कुछ नहीं बोलती। परन्तु वे सभी लोग अब ध्यान धारणा कर रहे हैं। ध्यान-धारणा करने के लिए आपको स्वयं को फाँसी पर नहीं लटकाना। आपके पास बहुत समय नहीं है। सोने से दस मिनट पूर्व आप ध्यान-धारणा कर सकते हैं, आपको सुखद प्रतीत होगा। आपको लगेगा कि आप अपनी समस्याओं से मुक्त हो गए हैं। विचार कुछ भी नहीं हैं। निर्विचार चेतना के विषय में मनोवैज्ञानिक ए.हयूम आपको सब बता चुके हैं। ए.हयूम जो फ्रायड के शिष्य थे और जिन्होंने फ्रायड के मातृरति (मातृमनोप्रथी) के सिद्धांत के विरुद्ध विद्रोह किया।

आप जानते हैं कि हम भारतीय शक्ति के पुजारी हैं। आजकल नवरात्रे चल रहे हैं परन्तु

हमने मातृप्रेम के सन्देश के कभी नहीं समझा। मैं समझती हूँ कि मातृप्रेम बहुत से कार्य करता है और यही कारण है कि आप भी सुहृदय बन जाते हैं। मैं नहीं समझ पाती कि कोई मानव किस प्रकार किसी दीन दुखी, गरीब के प्रति क्रूर हो सकता है! आपके अन्तःस्थित प्रेम समुद्र की तरह से उमड़ने लगता है और आप अत्यन्त उदार व्यक्ति बन जाते हैं। मैंने देखा है कि सभी उदार लोगों की परमात्मा देखभाल करता है। मैं अपनी पिताजी का उदाहरण दूंगी। वो भी अत्यन्त उदार व्यक्ति थे। वे सदैव कहा करते थे कि घर के दरवाजे, खिड़कियाँ हमेशा खुले रखो। हम यदि उनसे कहते कि चोर घुस आएंगे तो वे कहते कि उन्हें आने दो। संगीत प्रेमी होने के कारण उन्होंने एक बड़ा ग्रामोफोन रखा हुआ था। एक दिन एक चोर घर में घुस आया और ग्रामोफोन उठा कर ले गया। अगले दिन पिताजी गम्भीर मुद्रा में बैठे हुए थे। मेरी माताजी ने पूछा कि क्या उन्हें ग्रामोफोन जाने का अफसोस हो रहा है? कहने लगे नहीं, नहीं, ग्रामोफोन तो मैं दूसरा भी खरीद सकता हूँ। यह व्यक्ति जो संगीत का गुण-ग्राही प्रतीत होता है, केवल ग्रामोफोन ही ले गया है, रिकार्ड तो वो ले ही नहीं गया। बजाएगा क्या? मेरी माताजी ने कहा कि आप अखबार में विज्ञापन दे दें जो व्यक्ति ग्रामोफोन ले गया है वो रिकार्ड भी ले जाए। कहने का मतलब यह है दुनिया में इतने उदार लोग भी हैं। मैंने बहुत से उदार लोग देखे हैं और गांधी जी ने जब स्वतन्त्रता संग्राम की घोषणा की थी तब वे न केवल जेल गए परन्तु सर्वस्व त्याग

दिया। हम लोग बहुत बड़े बड़े घरों में रहते थे। तत्पश्चात् हम झोंपड़ियों में चले गए। परन्तु उन झोंपड़ियों का भी हमने आनन्द लिया क्योंकि आनन्द तो हमारी राष्ट्रभक्ति का था और इस भावना ने उस समय बहुत सहायता की। लोगों को इस भावना के कारण महात्मा गांधी को बहुत सहायता प्राप्त हुई।

आजकल पश्चिमी देशों से भिन्न प्रकार की नई नई वस्तुएं आ रही हैं। ठीक है इसमें कोई बुराई नहीं है। ये आनी ही चाहिए। हमें सम्पन्न होना है और हमारे देश को सम्पन्न होना है और मैं मानती हूँ हमारे देश को अधिक से अधिक वस्तुएं बनानी हैं। परन्तु इन चीजों के पीछे पीछे भटकना नहीं है। एक अन्य प्रकार की भी भटकन खड़ी हो जाती है कि मैं इस महिला को क्या दूँ? इन महाशय के लिए मैं क्या करूँ? कहने से अभिप्राय कि चिन्ता एक दूसरा रूप धारण कर लेती है कि क्या किया जाए? ऐसी क्या चीज दी जाए उन्हें ये न लगे कि रिश्वत दी जा रही है, क्योंकि कभी कभी सरकारी नौकर इतने सख्त होते हैं कि कोई भी चीज जब आप उन्हें देते हैं तो उन्हें लगता है कि रिश्वत दी जा रही है। मैंने कहा ये रिश्वत नहीं है। प्रेम के कारण ये चीज आपको दे रही थी। क्या आप इसे ले लेंगे? बड़ी कठिनाई से वे लोग किसी चीज को स्वीकार करते हैं। परन्तु प्रेम की अभिव्यक्ति का भी तो यही मार्ग है। आपने प्रेम के कारण आप बहुत लोकप्रिय हो जाएंगे अपने दफ्तर में, अपने कार्य पर और पूरे देश में। लोग आपको याद करेंगे कि यही व्यक्ति था जिसने

लोगों की देखभाल की और लोगों के लिए इतना कार्य किया। आपको यदि लोगों के प्रति प्रेम नहीं है तो आप अपने विषय में और फिजूल की चीजों में चिन्तित रहेंगे। आइ.ए.एस. महिलाओं को भी मेरा हार्दिक धन्यवाद कि उन्होंने मुझे यहां निमन्त्रित किया। मैं आप लोगों को बताना चाहूँगी कि महिलाओं को अपने पतियों की सहायता करनी ही हांती है। उन्हें ये समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि वे शक्ति हैं और ये शक्ति उन्हें पुरुषों को देनी चाहिए ताकि वे बेहतर कार्य कर सकें। कभी-कभी तो मुझे बड़े अजीबोगरीब अनुभव होते हैं। ये मैं आपको सुनाना चाहूँगी। अत्यन्त रोचक बात है कि आरम्भ में मुझे आपकी वरिष्ठता और कनिष्ठता के बारे में बिल्कुल भी ज्ञान न था। इस बात का मुझे बिल्कुल भी ज्ञान न था। शास्त्री जी के साथ कार्य करने के लिए मेरे पति दिल्ली आए। एक पार्टी में विश्वविद्यालय की मेरी एक मित्र मुझे मिली उसने मुझसे पूछा, "अरे! आप कैसी हैं?" मैंने कहा, "मेरे पति यहां आ गए हैं", वो क्या करते हैं?" मैंने कहा वह सरकारी नौकर है... यहाँ पर सभी सरकारी नौकर हैं परन्तु वे किस पद पर हैं?" मैंने उत्तर दिया, "मैं नहीं जानती, परन्तु वे यहीं किसी पद पर हैं।" तुम रहती कहाँ हो? मैंने बताया कि मे। मीना बाग में रहती हूँ। हा! मीना बाग में! आपके पति क्या करते हैं? तुम्हें तो कहीं बेहतर पति मिल सकते थे। तुमने ऐसे आदमी से विवाह क्यों किया जो आपको मीना बाग में रखते हैं। बाबा! मैं नहीं जानती कि मीना बाग इतनी बुरी जगह है। मैंने उसे बताया

कि शास्त्री जी ने हमें यहाँ आने को कहा क्योंकि और कहीं जगह न थी तो उन्होंने हमें मीना बाग में जगह दे दी। जिस प्रकार से वो कह रही थी मुझे लगा मीना बाग बहुत बुरी जगह थी। तब वह कहने लगी ये जो महाशय आ रहे हैं ये लम्बे व्यक्ति.....तुम नहीं जानती ये बहुत महत्वपूर्ण हैं। तुम किसी तरह से इनसे बातचीत कर लो ये तुम्हारे पति को बहुत अच्छी नौकरी भी दिलवा देंगे और बहुत अच्छा घर भी। और जो व्यक्ति आ रहे थे वो मेरे पति थे। कहने लगी, तुम इन्हें जानती हो? मैंने कहा, हाँ, कैसे? ये मेरे पति हैं। उसके बाद उसने मुझसे बात नहीं की। कभी नहीं कहा कि मीना बाग में रहना इतना बुरा है आदि आदि। तो जो ज्ञान सरकारी घरों के विषयों में, सरकारी सम्पदा अधिकारियों को भी नहीं था वह उस महिला को था कि फलों जगह आइ.ए.एस. अधिकारियों के लिए है फलों जगह नहीं। क्या आप इस प्रकार की कल्पना करते हैं? अतः महिलाओं की इस प्रकार की लिप्सा व्यर्थ है।

मुझे ये जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आपकी यह संस्था इतना अच्छा और रचनात्मक कार्य कर रही है। वास्तव में मुझे बहुत खुशी हुई। मेरे पति कहते हैं कि तुम समाजवादी हो क्योंकि मैं सदा सामाजिक समस्याओं पर ही सोचती रहती हूँ। जैसे भी हो मैं समाजवादी हूँ क्योंकि यह सामूहिक विवेक है। जब मैंने सुना कि आप लोग इस प्रकार का कार्य कर रहे हैं तो मैंने कहा आश्चर्यजनक। मैं कल्पना भी नहीं कर सकती। उन दिनों में महिलाएं इधर-उधर की

चीजों की बात करती थीं। कभी समाज की बात नहीं करती थी। एक अजीबोगरीब वातावरण था। अंग्रेजों ने अपनी विरासत हमारे सिर पर छोड़ दी थी और हम उसी में मस्त थे। लोगों के मस्तिष्क में अंग्रेजों से बेहतर कुछ अन्य न आता था। नेत्रहीन लोगों की संस्था की मैं अध्यक्ष थी। इस संस्था का नाम था 'नेत्रहीन समाज के मित्र'। इस संस्था के लिए हमें एक कार्यक्रम किया जिसमें नेत्रहीन लोगों ने ही अभिनय किया। गवर्नर साहब ने आना था और जब वे आए तो आयोजकों ने जानना चाहा कि उनकी समीप वाली कुर्सी पर कौन बैठेगा। संस्था के अध्यक्ष होने के नाते केवल मुझको वहाँ बैठने के लिए कहा जाने वाला था। परन्तु इस बात को लेकर वे लोग परस्पर लड़ने लगे। मुझे बहुत घबराहट हुई। मैंने सोचा कि इसे मजाक में ले लेना चाहिए। इस समस्या के समाधान का यही सर्वोत्तम तरीका है तो मैंने कहा कि गवर्नर के सिर पर हम एक फट्टा रख लेंगे और चिड़ियों की तरह से उस पर बैठ जाएंगे। तुरन्त उनका क्रोध शान्त हो गया और सभी कुछ ठीक हो गया। मेरा कहने से अभिप्राय ये है कि महिलाओं का स्वभाव परिवर्तित हो गया है। ये बात आप स्पष्ट देख सकती हैं। चाहे महिलाएं आत्मकेन्द्रित प्रतीत हों फिर भी मुझे प्रतीत होता है कि वे सामाजिक भी हैं। वे पढ़ती लिखती हैं और समझती हैं कि इस देश में क्या हो रहा है। मैं कहूँगी कि आजकल हमारा देश अत्यन्त उथल-पुथल की स्थिति में है और ये सारी चीजें हमें समस्याओं के समाधान में सहायक होगी। वेशुमार समस्याओं में से कुछ

समस्याओं का समाधान होते ही मुझे विश्वास है कि हमारा देश महानतम देशों में से एक होगा। प्रतिभा की यहाँ कोई कमी नहीं है। इसके विषय में कोई सन्देह नहीं। कठोर परिश्रम करने वालों का भी यहाँ अभाव नहीं है। अभाव है तो केवल किसी ऐसे व्यक्ति का जो इन्हें योजनाबद्ध कर सके और वह व्यक्ति आत्मसाक्षात्कारी हो तथा जिसमें आत्मविश्वास हो, जिसमें आन्तरिक शक्ति हो और जो इस बात की चिन्ता न करे कि अन्य लोग क्या कर रहे हैं। तब सब कुछ परिवर्तित हो सकता है। और आप लोगों का अन्तर्परिवर्तन सुन्दर मानव के रूप में हो सकता है। आप अपनी सभी विध्वंसकारी आदतें त्याग दें। इन्हें पूर्णतः त्याग दें। मैं कभी नहीं कहती कि 'त्याग दो'। ऐसा यदि मैं कहूँगी तो आधे लोग तो यहाँ से उठकर ही चले जाएंगे। लन्दन में मैंने देखा कि बारह लोग जिन्हें नशे की लत थी, उन्होंने रातोंरात नशे छोड़ दिए। नशा सेवन आदि की समस्याएं हम बिना किसी कठिनाई के हल कर सकते हैं और आप लोगों को इसी कार्य के लिए पदारूढ़ किया गया है। आपकी स्थिति बहुत कठिन है क्योंकि आप पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। जिसे समझा जाना आवश्यक है। बिना जिम्मेदारी को समझे हम कुछ भी प्राप्त न कर सकेंगे। परन्तु एक बार यदि आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लें तो स्वतः ही आप जिम्मेदार बन जाएंगे। और जिम्मेदारी का बोझ भी आपको महसूस न होगा। आप एकदम शान्त हो जाएंगे। ऐसे व्यक्ति से मिलना भी अत्यन्त सुखद होता है। आप हैरान होंगे कि कभी कभी तो चेहरे परिवर्तित हो

जाते हैं, शरीर परिवर्तित हो जाता है और अन्तर्परिवर्तन को देखकर हैरानी होती है। ये सब आपमें अन्तर्जात है, आप सबको प्राप्त है, आपमें कार्यरत है। केवल आपको अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना है। यह आपका अन्तर्ज्ञान है, अत्यन्त सूक्ष्म ज्ञान।

सभी महिलाओं को मैं धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने मुझे यहाँ बुलाया। ये अत्यन्त अद्भुत अनुभव है। मैं आज तक ये न जानती थी कि आई.ए.एस अधिकारी भी इस सूक्ष्म ज्ञान को पाने के इच्छुक होंगे। मुम्बई में जब ये कार्य हुआ तो मुझे हैरानी हुई। अब वे लोग एक सभागार में सामूहिक रूप से ध्यान धारणा कर रहे हैं। जिस प्रकार उन्होंने मेरा स्वागत किया वह वास्तव में आश्चर्यजनक है। मैं तो हमेशा यही सोचा करती थी कि मुम्बई में आई.ए.एस. अधिकारी अत्यन्त घमण्डी हैं। वे लोग आपकी ओर कभी देखेंगे भी नहीं। परन्तु वे लोग अत्यन्त विनम्र बन गए हैं। मैं नहीं जानती किस प्रकार उनमें ये श्रेष्ठता मनोग्रन्थि आ गई? उनके विषय में हमारे पास बहुत सी शिकायतें थीं। परन्तु अब वे बहुत परिवर्तित हो गए हैं। इसी प्रकार आप सबको भी परिवर्तित होना चाहिए और सामूहिक बनना चाहिए। यह संयुक्त होना नहीं है सामूहिक होना है। एक दूसरे की सहायता करते हुए इस तरह के जीवन के विषय में आप सोचें। विश्व भर में जहाँ भी आप जाएंगे आपको बहन-भाई मिलेंगे। वो भी यहाँ पर आते हैं। यहाँ आकर वे हमारी मातृभूमि, भारतभूमि को चूमते हैं। मैंने जब उनसे पूछा कि तुम ऐसा क्यों करते हो तो उत्तर मिला ये

योगभूमि है, विशेष देश है। यहाँ पर हमें हमारा आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। आपको हैरानी होगी कि ये देश योगभूमि है।

एक बार अपने पति के साथ जब मैं वायुयान से यात्रा कर रही थी तो मैंने अपने पति को बताया कि हम भारत में प्रवेश कर रहे हैं उन्होंने पूछा, "तुमने कैसे जाना?" मैंने कहा, "चारों तरफ मुझे चैतन्य दिखाई दे रहा है। वे अपनी सीट से उठकर जहाज के चालक के पास इस बात की सच्चाई को परखने के लिए गए। चालक ने कहा, "श्रीमन हमने अभी-अभी भारत में प्रवेश किया है। मैंने कहा, "देखो ये हमारी भूमि है जो आध्यात्मिकता से परिपूर्ण है। जो भी कुछ लिखा गया है उसे हमें सत्यापित करना चाहिए। देखना चाहिए कि क्यों कुछ स्थान स्वयंभु है? किस प्रकार आप ये बात जान सकते हैं? स्थान-स्थान पर मन्दिर बने हुए हैं। स्वयंभु मन्दिरों के चैतन्य को आप अपनी अंगुलियों पर महसूस कर सकते हैं। आप हैरान होंगे कि मक्का में एक बड़ा काला पत्थर है। मोहम्मद साहब ने कहा था कि पत्थरों को मत पूजो क्योंकि मूर्तियाँ बनाकर लोग धनार्जन करते थे। परन्तु इस पत्थर की परिक्रमा करने के लिए उन्होंने कहा, और इसकी परिक्रमा करना मुसलमानों का बहुत बड़ा कार्य है। उनसे पूछें कि वे पत्थर को पूजा क्यों करते हैं? वे नहीं जानते, परन्तु मैं इस बात को जानती हूँ क्योंकि यह शास्त्रों में लिखा हुआ है कि यह पत्थर मक्काेश्वर शिव हैं। यह शिव हैं। मेरा ऐसा कहते हो चैतन्य लहरियाँ बहने लगी हैं। उस पत्थर में

शिव हैं, यह शिव की चैतन्य-लहरियाँ हैं। यह सच्चाई है। मराठी पत्रिका में हाल ही में मैंने एक लेख पढ़ा जिसमें लिखा था कि इस्लाम धर्म आने से पूर्व शिव को पूजा जाता था। परन्तु मन्दिरों में लोग बहुत ज्यादा कर्मकाण्डी बन गए थे। मोहम्मद साहब ने कहा कि पत्थरों को मत पूजो। परन्तु स्वयंभु देवता भी तो हैं। वहाँ जाकर अपनी चैतन्य लहरियों से जब आप इस सत्य को जाँचेंगे तो जान जायेंगे कि आप लोग आत्मसाक्षात्कार के योग्य हैं। आपका भूत कुछ भी रहा हो, कोई बात नहीं। अब हमें वर्तमान में रहना है। भूतकाल समाप्त हो गया है, भविष्य का कोई अस्तित्व नहीं। आप वर्तमान में रहेंगे और यही सच्चाई है। आप सब चैतन्य लहरियाँ महसूस कर सकते हैं। इस देश के बहुत से सन्तों ने कहा कि यह आपके अन्दर विद्यमान है, अपने अन्दर इसे खोजो। शान्ति आपके अन्तर्निहित है। कुण्डलिनी जागृति के विषय में भी जो कुछ उन्होंने लिखा उसे कोई नहीं समझता। कबीर साहब ने इसके विषय में लिखा, "ईडा, पिंगला, सुखमन नाडी रे, शून्य शिखर पर अनहद वाजे रे। उन्होंने बहुत कुछ कहा पर कबीर को कौन समझता है। गुरुनानक देव ने भी स्पष्ट कहा,

काहे रे बन खोजन जाई
सदा निवासी, सदा अलेपा
तोहे संग समाई

परन्तु यह सब कहने सुनने की बातें बन गई हैं। फिर कबीर साहब ने कहा,

पढ़ि पढ़ि पण्डित मूर्ख भए।

श्री आदिशंकराचार्य ने भी माँ आदिशक्ति से प्रार्थना की कि मुझे शब्दजाल से मुक्त करो। महाराष्ट्र में एक थैला भरके मूर्तियां लेकर सुबह चार बजे लोग पूजा करनी शुरू कर देते हैं और नौ बजे तक पूजा करते हैं। तब स्नान करके कुछ खाकर दफ्तर जाते हैं। वहाँ ये आम प्रथा है। हमें समझना चाहिए कि ये मात्र कर्मकाण्ड है, आपको चाहिए कि सच्चाई को समझो और यह जान लो कि किसकी पूजा की जानी चाहिए। इन सब बातों पर अपनी शक्ति व्यर्थ नहीं करनी चाहिए। उस ज्ञान में उतर जाना बहुत आसान है केवल वही ज्ञान सत्य है। वही परमेश्वरी प्रेम है। आप समझ भी नहीं पाते कि किस प्रकार आप इतने भले, प्रेममय और सम्माननीय बन जाते हैं। आपके अन्दर से ये इतनी अद्भुत चीज है। जिसे बिना कुछ खर्च किए आप पा सकते हैं। इसके लिए केवल प्रार्थना करें। आपके विकास की यह जीवन्त प्रक्रिया है। विकसित होने के लिए हमने कितना धन खर्च किया है। कुछ भी नहीं। हमें कुछ भी नहीं खर्चना पड़ता। यह स्वतः ही हो जाता है। नन्हें से बीज की तरह ये अंकुरित हो जाता है। परन्तु इसे बढ़ाना होता है और इसके लिए आपको प्रतिदिन कुछ देर ध्यान-धारणा करना आवश्यक है। यह कोई लम्बी-चौड़ी क्रिया नहीं है, एक प्रकार से चक्रों को शुद्ध करने का तरीका है। कभी-कभी चक्रों में बाधाएं आ जाती हैं जिनका शुद्ध होना आवश्यक है और यह कार्य ध्यान धारणा द्वारा किया जा सकता है। ध्यान-धारणा शक्ति एवं आनन्द प्रदायी है।

मुझे आशा है कि यदि आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने की इच्छा करेंगे तो यह कार्य हो जाएगा। जैसा बताया गया है कि यह कार्य बहुत सहज है और इस पर कोई विशेष समय नहीं लगता। यह तो घटना मात्र है। सर्वप्रथम आप सबको क्षमा कर दें। अब लोग कहते हैं कि श्रीमाताजी हम क्षमा नहीं कर सकते। विशेष रूप से पश्चिम के लोग ऐसा कहते हैं। वे क्षमा नहीं कर सकते। बिल्कुल भी नहीं। परन्तु आप सोचें क्षमा न करके भी आपको क्या लाभ होता है। क्षमा न करने से तो आप उनके हाथों में खेलते हैं और स्वयं को कष्ट देते हैं अतः बेहतर होगा आप सबको क्षमा कर दें। मैं जानती हूँ कि बहुत से भयानक लोग हैं जिन्होंने आपको बहुत सताया होगा, कष्ट दिया होगा, परन्तु उनको क्षमा कर दें। आप स्वयं को भी क्षमा कर दें। किसी भी कर्म के लिए स्वयं को दोषी न मानें। जो होना था वह हो चुका, बस समाप्त।

उन बातों को याद करके स्वयं को दोषी मानने का क्या लाभ है? कभी-कभी ये दोष भाव बहुत बढ़ जाता है। एक बार मैंने एक व्यक्ति से पूछा कि आप क्यों स्वयं को दोषी मान रहे हो? कहने लगा मैंने अध्यक्ष पर कॉफी गिरा दी। मैंने कहा, "तो क्या हुआ? आपने जान-बूझकर ऐसा नहीं किया, तो आप क्यों ऐसा सोचते हैं। तब कहीं उसने स्वयं को क्षमा किया। ऐसी भावना किसी को जीवन भर परेशान करती रहे इसकी आप कल्पना करें! तो व्यक्ति को इस प्रकार नहीं सोचना चाहिए कि मैंने फलां गलतियाँ की है कैसे मुझे आत्मसाक्षात्कार मिल सकता है।

ये बहुत आवश्यक है कि आप स्वयं को दोषी न मानें। आपने गर अपराध किए होते तो आप जेल में बैठे होते यहाँ न होते। स्वयं के विषय में खुद निर्णय न करें। स्वयं को पहचानें। अपने आपको पहचानने के लिए ये आपको करना होगा। अपने प्रति आपकी भावना प्रेम एवं सम्मानमय होनी चाहिए। मुझे आशा है कि आज ही आपकी इच्छानुरूप आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाएगा। जो लोग आत्मसाक्षात्कार नहीं लेना चाहते वो बाहर चले जाएं क्योंकि मैं नहीं चाहती कि वे अन्य लोगों के उत्थान में बाधा डालें। आप यदि आत्मसाक्षात्कार नहीं लेना चाहते तो मैं इसे आप पर थोप नहीं सकती। आत्मसाक्षात्कार न किसी पर थोपा जा सकता है न इसके लिए धन दिया जा सकता है न इसके लिए धन दिया जा सकता है। कुण्डलिनी यदि नहीं उठती तो बात और है। यहाँ पर हमारे ध्यान केन्द्र हैं वहाँ जाकर अपने चक्रों की खराबियों को आप ठीक करवा सकते हैं। स्वयं पर विश्वास रखें इस कार्य में बहुत अधिक समय नहीं लगेगा। यह तुरन्त कार्यान्वित होगा। विदेशी लोग स्वयं को क्षमा नहीं कर पाते और भारतीय दूसरों को। दोनों के दृष्टिकोण भिन्न भिन्न हैं परन्तु हमें दोनों को क्षमा करना होगा। इस प्रकार छिन्न-भिन्न होने के लिए परमात्मा ने आपको नहीं बनाया, अपनी गरिमा को प्राप्त करने के लिए बनाया है।

आप अपने दोनों हाथ मेरी ओर फैला दें और यदि जूते पहने हो तो इन्हें उतार दें क्योंकि पृथ्वी माँ भी हमारे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने में बहुत सहायक होती है। आप दिल्ली में,

भारतभूमि में, योगभूमि पर बैठे हैं। इस देश में जागृति बहुत शीघ्र होती है विशेष रूप से आप लोगों को क्योंकि आप लोग इस देश को बहुत प्रेम करते हैं और इसके लिए कठोर परिश्रम भी करते हैं। तो बिना किसी सोच-विचार के अपने दोनों हाथ मेरी ओर फैला दें। मेरी प्रार्थना है कि आप सबको और स्वयं को भी क्षमा कर दें। यदि आप ऐसा नहीं करते तो आपका विशुद्धि चक्र बाधित रहेगा और आज्ञा चक्र भी अवरूद्ध रहेगा। अपने हाथों पर सबसे पहले आपको अंगुलियों के सिरों पर गर्म या ठण्डी हवा महसूस होगी और फिर आपकी हथेलियों पर। कुछ लोग सोचते हैं कि यह वातानुकूलन (Air Condition) के कारण है, परन्तु ऐसा कुछ नहीं है। स्वयं पर भरोसा करें। अब दायें हाथ मेरी ओर करें और अपने बाएँ हाथ से, सिर को थोड़ा झुकाकर, तालू भाग में देखें कि यहाँ से भी शीतल लहरियाँ निकल रही हैं। अपने हाथ को इधर-उधर चलाकर महसूस करें। लहरियाँ यदि गर्म हैं तो आपको कहना होगा कि मैंने सबको क्षमा किया। हृदय से आपको क्षमा करना होगा। अब अपना बायाँ हाथ मेरी ओर करके सिर के ऊपर दायें हाथ से चैतन्य महसूस करें। अब दोनों हाथ मेरी ओर करके बिना कुछ सोचे मेरी ओर देखें। कुछ क्षणों की निर्विचारिता भी बहुत महत्वपूर्ण है इसे निर्विचार समाधि कहते हैं जो अन्ततः निर्विकल्प अवस्था बन जाती है। पहले आप निर्विचार चेतना में आते हैं फिर निर्विकल्प चेतना में। यही स्थिति आपको प्राप्त करनी है। अब जिन लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो

गया है वे अपने दोनों हाथ ऊपर उठाएँ आपमें से अधिकतर को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है। आपको बधाई हो जिन लोगों को महसूस नहीं हुआ वे हमारे किसी भी केंद्र पर जाकर आत्मसाक्षात्कार पा लें। कुण्डलिनी आपकी व्यक्तिगत माँ है, आपके विषय में सभी कुछ जानती है। आपकी आकांक्षाओं और भूत को जानती है। आपकी शारीरिक समस्याओं का उन्हें ज्ञान है। वे आपकी माँ हैं और माँ की तरह से बच्चे को जन्म देने के सभी कष्ट स्वयं झेल लेती हैं। कुण्डलिनी भी आपको माँ हैं और अपने प्रेम के कारण यह सब कार्य करती हैं। समय आ गया है कि हम सब अन्तर्परिवर्तित हों

और सुन्दर (विकसित) लोगों की नई पीढ़ी में प्रवेश करें। यह अत्यन्त अद्भुत समय है। इसके लिए मैंने तो केवल इतना किया है कि सामूहिक चेतना की विधि खोजी है। मैंने केवल यही कार्य किया है। अन्यथा यह सब पहले से ही विद्यमान था। नाथपंथी इसका प्रयोग करते थे। लोगों को इसका ज्ञान था। मैंने मानवीय समस्याओं के सम्मिश्रण और क्रम परिवर्तन (Permutation and Combinations) की खोज की और देखा आप सबमें ये क्यों है। यह सामूहिक घटना पूरे विश्व के लिए आशीर्वाद बन गई है। एक बार फिर मैं आपका धन्यवाद करती हूँ कि आपने मुझे यहाँ निमन्त्रित किया।

परमात्मा आपको धन्य करें



अन्य लोगों को प्रभावित कैसे करें!

हेग, हालैण्ड-17.9.86

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

अन्य लोगों को प्रभावित करने के लिए हमें ये पता होना चाहिए कि अपने आप पर हमारा कितना नियंत्रण है। ये बहुत आवश्यक है। उदाहरण के रूप में कुछ लोगों की अपनी तस्वीर अच्छी नहीं होती फिर भी वे अन्य लोगों को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं। यह तो मात्र मजाक है। जिस व्यक्ति की अपनी ही तस्वीर खराब है उससे कौन प्रभावित होगा? अतः बाह्य रूप को निखारने से पूर्व आंतरिक रूप का निखारा जाना आवश्यक है।

उदाहरण के रूप में दफ्तर में सदैव देर से आने वाला व्यक्ति, समय का जिसे कोई विवेक नहीं, ऐसे व्यक्ति का सम्मान नहीं होता। अतः यदि आप अन्य लोगों से समय पर आने के लिए कहते हैं तो ठीक समय पर आने वाले लोगों में आपको प्रथम होना चाहिए। समय का पाबन्द होने के लिए आपका नाम हो। दस बजे यदि आपने दफ्तर पहुँचना है तो पाँच मिनट पहले वहाँ पर पहुँचे और ठीक समय पर अन्दर प्रवेश करें। समय की ये पाबन्दी बहुत ही महत्वपूर्ण है। ये पाबन्दी लोगों की सहायक होती है और इसके कारण लोगों के मन में आपका खौफ बन जाता है। वो सोचते हैं कि यह व्यक्ति

तो बहुत ही नियमित है और मैं हमेशा देर से पहुँचता हूँ। किसी से आपको यदि एक निश्चित समय पर मिलना हो तब भी आपको बिल्कुल समय-निष्ठ होना चाहिए। आपको सदैव समय निष्ठ होना है।

पश्चिम में विशेष रूप से मैंने देखा है कि लोग प्रातः बहुत देर से उठते हैं, बहुत आलसी हैं और मुर्दों की तरह से चलते हैं। वास्तविकता ये है कि वो संसार से ऊब चुके हैं। संसार में उन्हें भेज दिया गया है और किसी तरह से वे सब चला रहे हैं। ऐसा व्यक्ति किसी को प्रभावित नहीं कर सकता। लोग आपकी तस्वीर को देखते हैं कि यह व्यक्ति तो खुद ही किसी तरह से जीवन की गाड़ी धकेल रहा है क्यों हम इसी की तरह से चलें? यह हमें क्या बता सकता है? यदि आप स्वयं आलसी जीव हैं तो आप अन्य लोगों को प्रभावित नहीं कर सकते। अन्य लोगों को प्रभावित करने के लिए आपको प्रातः जल्दी उठने की आदत होनी चाहिए। प्रातः जल्दी उठकर नहा-धोकर चुस्त हो जाना चाहिए।

कुछ लोगों का विश्वास है कि फैशनेबुल होने से, फैशनेबुल वस्त्र धारण करने से लोग प्रभावित होते हैं ये बात सत्य नहीं है। क्योंकि वो

सोचते हैं कि आपमें आत्मविश्वास नहीं है। आपको अपनी एक ऐसी तस्वीर बनानी होगी कि आप इस प्रकार के गुणवान व्यक्ति हैं जैसे नाटक के चरित्र होते हैं। व्यक्ति उन्हीं विशेषताओं के साथ बातचीत करता है। लोगों को पूरी तरह से पता होना चाहिए कि ये आपकी शैली है तथा आपमें ये गुण हैं और इस मामले में आप कभी नहीं झुकते।

लोगों से बातचीत करते हुए आपकी शैली का उत्तम होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आपकी चाल-ढाल भी अच्छी होनी चाहिए। ये सब चीजें अच्छी तरह से व्यवस्थित कर लेनी चाहिए कि आप मरे-मरे से न चलें, अपनी टांगें इधर-उधर न फेंके, सीधे होकर चलें और सीधे बैठें। लोग इस बात को देखें कि आपमें आत्मविश्वास है, आत्मविश्वास विहीन आचरण किसी को भी प्रभावित नहीं कर सकता। अतः आपकी चाल-ढाल, बातचीत, उठने-बैठने के तरीके और अभिव्यक्ति के ढंग से आत्मविश्वास छलकना चाहिए। आत्मविश्वास की भावना आपमें होनी चाहिए लेकिन व्यक्ति में आत्मविश्वास तभी आता है जब उसे लगे कि वह सुरक्षित है। सहजयोग में यदि आपका मध्य हृदय चक्र ठीक है तो ऐसा हो सकता है। अपने आपसे कहें, "श्री माताजी मेरे साथ हैं, श्री माताजी मेरी सहायता कर रही हैं और मैं श्रीमाताजी के साथ हूँ। चिन्ता करने के लिए मेरे सम्मुख कुछ भी नहीं है।" तब आपका मध्य हृदय चक्र ठीक हो जाएगा। ये बात आप अन्य लोगों से नहीं कह सकते परन्तु यदि आपका व्यक्तित्व आत्मविश्वास से परिपूर्ण है तो यह बात आप दूसरों में भर सकते हैं।

परन्तु यदि आपमें आत्म-विश्वास की कमी है तो आप ये कार्य न कर सकेंगे। अतः सर्वप्रथम अपने में आत्मविश्वास स्थापित किया जाना चाहिए। सहजयोगियों के लिए यह कह देना बहुत आसान है कि, "मैं आत्मा हूँ, मैं शिशु हूँ, आदिशक्ति ने स्वयं मुझे चुना है।" अतः आपमें अथाह आत्मविश्वास होना चाहिए।

आपको देखना चाहिए कि लोगों के बीच में बैठकर कैसे आप खाना खाते हैं। कई लोग अपना मुँह बहुत बड़ा खोलकर खाना खाते हुए बहुत आवाज करते हैं, अन्य लोग आपकी ये सारी बातें देखते हैं। किस प्रकार आप खाते हैं, किस प्रकार आप बातचीत करते हैं। अपना मुँह खुला न रखें, इस प्रकार आप कभी लोगों को प्रभावित न कर सकेंगे। लेकिन मुँह को भींचकर भी न रखें। इसे सामान्य रूप से बन्द रखें ताकि लोग ये न समझें कि आप उन्हें चिढ़ा रहे हैं या फिर आप उनसे नाराज हैं। चेहरे के हाव-भाव सामान्य होने चाहिए जो न आक्रामक हों और न दबू। आपका मुँह यदि खुला रहता है तो लोग सोचेंगे, "ओह! ये अजीब बेवकूफ है।" दाँतों से यदि आप अपने होंठ दबाते हैं तो लोग आपको आक्रामक समझ लेंगे। अतः व्यक्ति को देखना चाहिए कि अन्य लोगों के सम्मुख वह किस प्रकार बैठता है, किस प्रकार बातचीत करता है। अन्य लोगों को प्रभावित करने के लिए आवश्यक है कि आप सर्वप्रथम अपने व्यक्तित्व का सम्मान करें और फिर अपने व्यवहार द्वारा अन्य लोगों के व्यक्तित्व का।

कोई यदि आपके पास आता है तो उससे अत्यन्त भद्रता-पूर्वक बातचीत करें। ये समझकर

कि साक्षात् परमात्मा आपके पास आए हैं। मुझमें यदि आत्मा है तो उसमें भी तो है। ध्यान रखें कि वह अच्छी तरह से आरामपूर्वक बैठ सकें। उससे चाय आदि के लिए पूछें। उसे ये महसूस करवाएं कि उसके आने से आपको कोई परेशानी नहीं हुई। उससे मिलकर आपको प्रसन्नता हुई। अत्यन्त प्रेम पूर्वक उसके साथ बैठें। कई बार आत्मविश्वास की कमी के कारण व्यक्ति आगन्तुक के विषय में अधीर हो उठता है। ये अधीरता असुरक्षा का चिह्न है। किसी से बातचीत करते हुए आपको अधीर नहीं होना चाहिए। व्यक्ति की स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि दूसरा व्यक्ति पूर्णतः विश्वस्त हो सके और उसे लगे कि ये महाशय मेरे आने से बहुत खुश हैं।

लोगों को प्रभावित करने का एक अन्य तरीका ये है कि उन्हें बोलने का अवसर दें। स्वयं ज्यादा न बोलें, धैर्यपूर्वक उनकी बात को सुनें। उनकी बात को सुनकर कहें, "निःसन्देह ये सत्य है, मैं आपके साथ सहमत हूँ...परन्तु..." फिर आप शुरू कर सकते हैं। "नहीं! बिल्कुल भी नहीं!" ऐसा करके उन्हें आघात न पहुँचाएं इसके विपरीत आपको देखना चाहिए कि वे क्या कहते हैं। आप मुझे देखें। बहुत बार मैं ऐसा ही करती हूँ। कोई यदि कुछ कहता है, "ओह! ये सत्य है परन्तु यह बात इस प्रकार है..." इस प्रकार उन्हें बुरा नहीं लगता। वो सोचते हैं कि आपने बात का दूसरा पक्ष भी देखा है तथा आपमें सन्तुलन है। अपने विचार दूसरों पर मत थोपें। अपनी बात लोगों को कहनी है परन्तु इस प्रकार कि उन्हें ये न लगे कि आप स्वयं को उन पर थोप रहे हैं।

जहाँ तक हो सके किसी से कोई कार्य करने के लिए न कहें। ऐसा करने से लोगों को चोट पहुँचती है। उदाहरण के रूप में मैं जब आप लोगों को कहती हूँ, "ऐसा करो, ये बत्ती बुझा दो।" आखिरकार आप मेरे बच्चे हैं इसलिए मेरा ऐसा कहना ठीक है। यह एक भिन्न प्रकार का सम्बन्ध है परन्तु जब आपमें अन्य लोगों से कार-व्यवहार करना होता है तब आपको चाहिए कि हल्के से उठें, बातचीत करते हुए बत्ती जला दें। उनसे कहें, "मैं यदि बत्ती जला दूँ तो आपको कष्ट तो न होगा?" आचरण सम्बन्धी आक्रामकता अपनी छाप छोड़ती है।

सहजयोग में यह दूसरी तरह से है। सहजयोग में कुण्डलिनी सर्वप्रथम है और उसके बाद सभी कार्य। लोगों को यदि आप प्रभावित करना चाहते हैं तो उनकी जड़ों को बनाना होगा और ऐसा करने के लिए आपको उनमें अपने प्रति विश्वास कायम करना होगा। उन्हें विश्वास होना चाहिए कि जो कुछ भी आप कह रहे हैं वह सत्य है। उन्हें लगे कि जो भी कुछ आप कह रहे हैं वह न असत्य है न ऐसी बात जिसमें आपकी अपनी श्रद्धा नहीं है। आपकी बात करने की शैली अन्य लोगों को प्रभावित करती है कि यह व्यक्ति सत्य कह रहा है। अतः सभी कुछ आपकी व्यवहार शैली से आरम्भ होना चाहिए।

और अब वेशभूषा। लोगों को प्रभावित करने के लिए वेशभूषा भी बहुत महत्वपूर्ण है। मान लो आप किसी से सरकारी रूप से जुड़े हुए हैं या व्यापार में उसे प्रभावित करना चाहते हैं। आपको चाहिए कि औपचारिक वस्त्र धारण करें, ढीले-ढाले या कभी-कभी पहने जाने वाले वस्त्र

न पहने। व्यापार के लिए उपयुक्त वेशभूषा धारण करें जैसे धारियों वाला गहरे नीले रंग का सूट जिसमें जैकिट भी हो, साफ-सुथरे अच्छे जूते अच्छी तरह से संवारे गए बाल जिनमें थोड़ा तेल भी लगा हुआ हो ठीक रहेगा। चुस्त व्यापारी सम प्रतीत हों।

दुनिया भर के फ्रैशन यदि आप करेंगे तो ये तो प्रतिदिन परिवर्तित होते रहते हैं। आज बाल इस तरफ होंगे तो कल उस तरफ। तो अपने बालों को इस प्रकार बनाएँ जैसे एक अधिकारी को बनाने चाहिए। बालों में भली-भाँति कंधी करें। पुराने समय में फिल्मों के अभिनेता भी बालों में तेल लगाया करते थे, कभी उनके बाल सूखे न होते थे। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि बाल अच्छी तरह से संवारे होने चाहिए। बाजार में आपके बालों को संवारने के लिए अनेक बिना तेल की वस्तुएं उपलब्ध हैं। बालों का संवरा होना आवश्यक है ताकि इस बात का पता चले कि आपने रूप-रंग तथा बालों की शैली की ओर ध्यान दिया। अतः पदानुसार अपनी उपयुक्त तस्वीर बनाएं। यदि कोई रसोईया तैराकी सूट पहनकर खड़ा हो जाए तो कैसा लगेगा? बड़ा ही अजीब। रसोइए को रसोइए की तरह से वस्त्र पहनने चाहिए। इसी प्रकार एक व्यापारी को व्यापारी की तरह से वेश-भूषा धारण करनी चाहिए। अपने दफ्तर आप जीन पहनकर नहीं जा सकते क्योंकि आप यदि ऐसा करेंगे तो सभी कर्मचारी वैसा ही करने लगेंगे। इस तरह के कार्यों से लापरवाही पनपती है। दफ्तर या व्यापार के स्थान से बाहर ढीलापन ठीक है परन्तु व्यापार में नहीं। मान लो हमारी एक बैठक चैतन्य लहरी ■ खंड : XII अंक : 9 & 10, 2000

(Drawing Room) है अब बैठक तो बैठक है शयनागार नहीं, दोनों को मिलाएँ नहीं। इनका गलत ढंग से उपयोग एक बार यदि आप करने लगे तो फिर इसका कोई अन्त नहीं। मैंने लोगों को ऐसे वस्त्र पहनकर दफ्तर जाते हुए देखा जो तैराकी सूट से लगते हैं। ये सारी चीजें सुधरनी आवश्यक हैं और इन्हें आसानी से सुधारा जा सकता है। लोगों को केवल इतना बताना होगा कि इस प्रकार उल्टे सीधे वस्त्र पहनकर वो किसी को प्रभावित नहीं कर सकते। बिना अपने रूप रंग और व्यवहार को निखारे दूसरों को प्रभावित नहीं किया जा सकता।

अन्य लोगों से कार-व्यवहार करते हुए आपको सच्चा होना चाहिए, झूठ न बोलें। न कहने वाली यदि कोई बात हो, तो न कहें। ये झूठ बोलना नहीं है। कहने के लायक चीजों को कहें। ऐसा न करें कि आज कुछ कहें, कल कुछ कहें और परसों कुछ और। इससे लोगों के मस्तिष्क में बहुत बड़ी रिक्ति बन जाती है। कहीं अन्दर से वे सोचते हैं कि आप धोखेबाज हैं और समस्याओं से भागने की कोशिश कर रहे हैं।

मान लो अभी मैं आपसे बात कर रही हूँ, बात करते करते मैं यदि घड़ी देखने लगूँ तो यह बहुत ही अपमानजनक है। आप यदि किसी विशेष चीज के बारे में बात कर रहे हैं और अचानक मैं विषय बदल दूँ तो यह भी बहुत अपमानजनक है क्योंकि सभी लोग इतने बुद्धिमान तो हैं कि इस बात को देख सकें कि आप उस मामले से बचने का प्रयत्न कर रहे हैं। एक सीमा तक आप इसे ले जा सकते हैं परन्तु फिर चीजें कुछ हास्यास्पद मोड़ लेने लगे तो यह

दर्शाने के लिए आपको फिर वापिस आना होगा। जैसे कल मैंने कहा, "कि आप जानते हैं कि मैंने कभी सर्पिणी (Serpent) के विषय में नहीं लिखा। किसी अन्य ने यदि इसके विषय में लिखा तो मैं क्यों इसका खुलासा करूँ। इसे मैं कभी सर्पिणी की शक्ति नहीं कहती क्योंकि ऐसा कथन लोगों को भ्रमित करता है। परन्तु फिर भी किसी ने ऐसा कहा है तो आप क्या कर सकते हैं?" ऐसी कोई बात यदि आप कह दें तो उसे एक ऐसे हास्यास्पद स्तर तक ले आएँ कि व्यक्ति स्वयं चुप हो जाए।

अचानक कभी विषय को न बदलें। इस प्रकार विषय बदलने का अर्थ ये होता है कि आप उस मामले से बचना चाहते हैं तथा इसका समाधान करने के योग्यता आपमें नहीं है। कई बार लोग ऐसा ही करते हैं, वो ऐसा ही कहते हैं, "ठीक है, हमें इस विषय पर बात करनी चाहिए।" आप ऐसा नहीं कर सकते, इस प्रकार से विषय परिवर्तन के कारण बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। दूसरों से बात करते हुए ध्यान रहे कि आप अपने विषय में न बोलें, "मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ।" इस बात को कोई पसन्द नहीं करता अपने विषय में बात करना मूर्खता है। अपनी डींग मारने के स्थान पर केवल पूछें, "आप क्या कर रहे हैं? आपका पेशा क्या है? आप कैसे हैं?" सामने वाले व्यक्ति से इस प्रकार के प्रश्न पूछें।

आपको जब बात करनी हो तो अपनी संस्था के बारे में बात करें। 'मैं' कहकर बात न करें सदैव 'हम' कहें। "मैं ऐसा कार्य कभी नहीं करता। ऐसा करने से मैं घृणा करता हूँ। मुझे इस चेतन्य लहरी ■ खंड : XII अंक : 9 & 10, 2000

पर विश्वास नहीं है।" ऐसा कहना नासमझी है। "हमें क्या करना है, हमारा ऐसा विश्वास है, हम ऐसा सोचते हैं, आपकी क्या राय है।" या उनसे वे सब बातें बताएं। अपनी संस्था, अपने उत्पादन आदि के विषय में बताएं। कहें "अब यह उपलब्ध है, ये वस्तु यहाँ है। हमने देखा है कि इससे बहुत लाभ हुआ है और यह इस प्रकार कार्य करती है। इसके विषय में हमारे पास सूचना है। आप ये विवरण देख सकते हैं और स्वयं उन्हें उपयोग कर सकते हैं।

दूसरे व्यक्ति की जो सेवा आप करते हैं वह बहुत पसन्द की जाती है। यह केवल अहं नहीं है, यह उसे सुख प्रदान करती है। जैसे लोग एयर इंडिया से यात्रा करना पसन्द करते हैं। बहुत से लोग कहते हैं कि हम एयर इंडिया से जाना पसन्द करेंगे। जानने का प्रयत्न करें कि क्यों? क्योंकि आजकल अन्य हवाई कम्पनी बम आदि के डर के कारण बहुत जाँच पड़ताल करती है और उनकी कीमतें भी बहुत ज्यादा हैं। एयर इंडिया को पसन्द करने का एक कारण ये भी है कि इसमें कार्य करने वाली महिलाएँ अत्यन्त विनम्र हैं। यात्रियों की भली-भाँति देखभाल करती हैं। वे घटिया औरतें नहीं हैं। खाना आदि परोसते हुए वे यात्रियों का बहुत ध्यान रखती हैं। उनके खाने में व्यंजन भी बहुत होते हैं। जितना चाहे खाना खाओ, आपका मनपसन्द खाना वे पाँच-छः बार आपको देते हैं। इन सब चीजों से आपको खुशी होती है। घण्टी बजाते ही वे आपके सम्मुख हाज़िर हो जाते हैं। मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि जब आपको विक्रय करना होता है तो आपको भी सेवा करनी पड़ती है।

एक बार जब आपको ये बात समझ आ जाती है तो आपका दृष्टिकोण ही परिवर्तित हो जाता है। आपको अन्य लोगों की सेवा करनी होती है। केवल सेवा द्वारा ही चीजें कार्यान्वित होती हैं मैं आपको बताऊंगी कि कैसे।

अंग्रेजों के साथ यह बहुत बड़ी समस्या है। यही कारण है कि उन्हें इतनी हानि हो रही है। वे अत्यन्त अक्खड़ हैं। किसी अंग्रेज के पास जाकर यदि आप पूछें, "क्या मैं आपके उत्पाद को देख सकता हूँ?" "आपको क्या चाहिए? मैं आपका उत्पाद देखना चाहूँगा। ठीक है, अभी हमारे पास देने के लिए कुछ नहीं है परन्तु यदि आप अपनी अर्जी छोड़ देंगे तो हम आपको यह चीज भेज देंगे।" समाप्त। उस व्यक्ति को कोई चिन्ता नहीं।

हर समय आपको चाहिए कि अपने ग्राहकों से बातचीत करने के लिए तैयार रहें। किसी व्यापारिक उद्यम में यदि आप कुछ बना रहे हैं तो आपको इसका पूरा ज्ञान होना चाहिए। इसके लिए सूचना पुस्तिका होनी चाहिए जो सदैव उपलब्ध हो। ठीक प्रकार से इसकी कीमतें तय की जानी चाहिए तथा इसे उचित ढंग से रखा जाना चाहिए। कोई यदि आपके पास आता है, उस व्यक्ति को यदि आप जानते हैं, वह यदि उपयुक्त व्यक्ति है और आपके पास यदि व्यापार के लिए आता है तो आप उससे कहें कि "यह चीज आपके सम्मुख है आप इसे ले और स्वयं देखें।" उसे समझाएं कि यह क्या है। "यह इस प्रकार है और इसके लिए हम आपको इतनी रियायत देंगे।" यह सारी चीजें मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं। उत्पाद के गुण के कारण

बाजार पर पकड़ नहीं बनती, इसको पेश करने के ढंग से बनती है। पेश करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी सूचना पुस्तिका उपयुक्त अच्छे लोगों से तैयार करवाई जानी चाहिए या आपको स्वयं देखना चाहिए कि यह कार्य सुन्दरता से हुआ है। इस पर कुछ खर्च कर लेने में अच्छाई है। यह खर्चा उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए मूल लागत है। आप यदि सोचें कि उत्पाद को कहीं रख देना भर ही काफी है तो यह बिक न सकेगा। आधुनिक समय में किसी भी वस्तु या उत्पाद को बेचने के लिए यह सब आवश्यक है

लोगों को प्रभावित करने के लिए विज्ञापनों से अधिक जरूरत उनसे भली भांति व्यवहार करने की है। मैं आपको बताती हूँ कि किसी भी चीज को खरीदने से पूर्व मैंने कहां से खरीददारी की थी और उन लोगों के साथ मुझे क्या अनुभव हुए थे। मैं ऐसे लोगों के पास जाना चाहती हूँ जो मेरे प्रति विनम्र, करुणामय तथा भले थे। जिनका आचरण मेरे प्रति बहुत अच्छा था और जिन्होंने मेरा मजाक उड़ाने के स्थान पर उस चीज के प्रति पूरी जानकारी दी थी। लायड में कुछ पूँजी लगाने के लिए मैं गई। बैंक में धन जमा करना बहुत बड़ी बात है। उन लोगों को समझना चाहिए कि यह बहुत बड़ी बात है। परन्तु यह लोग वहां पर एक छोटी सी लड़की बिठा देते हैं। आने वाले ग्राहकों से बातचीत करने के लिए अवश्य कोई अच्छे व्यक्तित्व का व्यक्ति होना चाहिए। एक छोटी सी लड़की वहाँ बैठी थी। ज्योंही मैं अन्दर पहुँची उसने पूछा, "आप कौन हैं?" मैंने उसे बताया, "मैं ये हूँ।" "ओह हम आपके लिए कुछ नहीं कर सकते।" मैंने कहा

ठीक है और तब मैंने उसे भारत के उच्चायुक्त का नाम बताया ताकि वो इस तरह से बात न करे।

तो उसने यह नहीं देखा कि मैं ड्राइवर चालित मर्सिडीज कार में आई थी। बहुत महंगी साड़ी पहने हुई थी। देखने में मैं बहुत सम्मान जनक थी। उसे समझ जाना चाहिए था कि मुझे एक सर्वसाधारण मजदूर की तरह से व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। तब उसने कहा कि मुझे अपनी पहचान देनी होगी आदि आदि। मैं इतनी तंग आई कि दूसरे बैंक में चली गई। उस बैंक के अधिकारी ने तुरन्त पहचान लिया कि यह बुद्धिमान व्यक्ति है और अच्छा ग्राहक। उस महिला ने देख लिया कि मैंने हीरे पहने हुए थे आदि आदि। एकदम वह बोली आइये, अति महत्वपूर्ण व्यक्ति कक्ष में चलते हैं। मैंने कुछ भी न कहा था। वह मुझे वहां ले गई और बड़े प्रेम से बात की। कहने लगी, "मैं एक मिनट का समय ले लूँ?" अन्दर जाकर फोन पर उसने मेरे बारे में सारी जानकारी प्राप्त कर ली।

इस प्रकार के कार्य व्यक्ति के सामने नहीं होने चाहिए। उसकी जानकारी का सत्यापन चुपके से कर लिया जाना चाहिए ताकि उसे बुरा न लगे। उसे पता नहीं लगना चाहिए कि आप उसके बारे में पूछताछ कर रहे हैं।

तो इस प्रकार से कार्य करना हमारी बहुत सहायता करता है क्योंकि आपको अक्खड़ नहीं बनना पड़ता। हेकड़ बनकर आपको कुछ कहना नहीं पड़ता। इस प्रकार की चीज किसी को पसन्द नहीं आती कि आप किसी को नीचा दिखाएं या उस पर सन्देह करने का प्रयत्न करें।

चैतन्य लहरी ■ खंड : XII अंक : 9 & 10, 2000

तीन चीजों का आपने ध्यान रखना है-व्यक्ति को आराम से बिठाना है और उसे सबकुछ बताना है, विश्वासपूर्वक उसकी बात सुननी है। तब वह व्यक्ति आप पर भरोसा करता है। किसी संस्था में यदि आपको कार्य संभालना हो तो आपका व्यक्तित्व अत्यन्त विवेकशील होना चाहिए। दूसरे जो आप कहते हैं उसका अनुसरण भी आपको करना चाहिए। मान लो मैं आपको कहूँ कि आपको किसी से पैसा नहीं लेना है और मैं स्वयं पैसा लेने लगूँ तो आप क्या करेंगे? आप मुझ पर बिल्कुल भरोसा न करेंगे। पूजा आदि के लिए जो भी पैसा आप मुझे देते हैं उसे मैं पैकेट बना कर रखती हूँ और आपके लिए चांदी आदि के बर्तन खरीदने के लिए लगाती हूँ। इसकी मुझे कोई जरूरत नहीं होती। मैं इसको इस्तेमाल करने की सोच भी नहीं सकती हूँ। यह पैसा आपने मुझे दिया है और कायदे से यह मेरा है। परन्तु मैं इससे पूजा के बर्तन खरीदती हूँ जिसे आप इस्तेमाल करते हैं। यह तो मजाक की बात है परन्तु सभी लोग जानते हैं कि श्रीमाताजी बिल्कुल शुद्ध हृदय हैं। आपको भी लोगों के साथ बिल्कुल साफ रहना होगा। उन्हें पता होना चाहिए कि आप उनसे चालाकी नहीं करते या उनकी पीठ पीछे उन्हें हानि नहीं पहुँचाते।

कुछ लोग आपकी अनुपस्थिति में आपको हानि पहुँचाने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोगों को कोई भी पसन्द नहीं करता। सहज ढंग से व्यवहार करते हुए कोई व्यक्ति यदि ठीक नहीं है तो उसे विनम्रता से बता दें कि समस्या क्या है। "हमारे सम्मुख यह समस्या है। आप बताएं कि इसका क्या समाधान है?" तब उस व्यक्ति

को बुरा नहीं लगेगा। परन्तु किसी व्यक्ति को आप यदि कहें कि आपको ऐसा पसन्द नहीं है तो उसे अच्छा नहीं लगेगा। मैं आपको सभी कुछ बताती हूँ परन्तु ऐसे ढंग से कि आप सब कुछ समझ भी लें और आपको बुरा भी न लगे। तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि आपकी शैली ऐसी होनी चाहिए जिसे लोग समझें और आपका व्यवहार उचित ढंग का हो।

वास्तव में जब आप लोगों को प्रभावित करने का प्रयत्न नहीं करते तो लोग आपसे प्रभावित होते हैं। कला को छिपाने में ही कला निहित है। इसके विषय में कोई संकल्प प्रकट नहीं होना चाहिए। लोगों की बातचीत में आपको दर्शाना चाहिए कि आप सब सुन रहे हैं और समझ रहे हैं। पाँच-दस लोगों से जब आपको बातचीत करनी हो तो उनमें सद्भावना उत्पन्न करनी चाहिए। अब जैसे मैं चाहती हूँ कि आप विवाह कर लें तो मैं आपको उस लड़की के विषय में बताऊंगी कि वह कैसी है। इस प्रकार से कि न तो आपको चोट पहुँचे और न उसे, और आप इसके लिए राजी हो जाएं। क्योंकि बाद में यदि कोई आपसे उसके विषय में कुछ बताता है तो आप कहेंगे मैंने यह बात नहीं बताई। अतः बहुत ही प्रेम से आप कहें कि उसमें “ये छोटी-छोटी चीजें हैं, परन्तु ठीक है, वह बहुत ही शालीन बन सकती है। इन सारी चीजों को वह चला सकती है।” अब ये आप पर निर्भर करेगा कि आप किस प्रकार चीजों को चलाते हैं। तो आपको व्यक्ति के विषय में पूरा ज्ञान होना चाहिए ताकि आप ये जान सकें कि अब ये मेरी जिम्मेदारी है।

अतः लोगों को जिम्मेदार बनाना भी प्रशासन का एक महत्वपूर्ण भाग है। आप स्वयं यदि सारा कुछ करना शुरू कर देंगे तो लोग आपके कार्य में हाथ नहीं बढ़ाएंगे, वे कुछ भी नहीं करेंगे। उनको जिम्मेदार बनाने का सर्वोत्तम उपाय उनकी प्रशंसा करना है। किसी ने यदि कोई अच्छा कार्य किया है तो उसे कहें आपने बहुत अच्छा कार्य किया है, परन्तु ये बात सीधे से न कहकर इस प्रकार से कहें कि उस व्यक्ति को चे लगे कि उसे सराहा गया है। मधुर शब्दों से और छोटी-छोटी चीजों से भी आप यह कार्य कर सकते हैं।

मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। राजेश बहुत अच्छे हैं और उन्हें किसी चीज की जरूरत नहीं है। वह इतना धनवान है कि हम उसे क्या दे सकते हैं। एक बार वह मुझे अपनी गाड़ी में कहीं ले जा रहा था उसके हाथ में एक स्विस् चाकू था। उसने वह चाकू अपने ड्राइवर को फल आदि काटने के लिए दिया। इसके पश्चात् वह चाकू गुम हो गया। वह बहुत नाराज़ हुआ। ड्राइवर का धोखा देना उसे सहन न हुआ। वह उसे थाने ले गया परन्तु वह चाकू उसे न मिला। मैंने राजेश की नाराज़गी को देखा और कहा कि भूल जाओ कोई बात नहीं है। अगली बार मैं भारत गई तो उसके लिए एक बहुत सुन्दर सा चाकू लेकर गई। उसे देखकर वह द्रवित हो उठे, कहने लगे, “श्रीमाताजी आपको कैसे याद रहा?” मैंने कहा, “उस समय आप बहुत परेशान हुए थे।” उसने कहा, “चाकू के लिए नहीं उस व्यक्ति को धोखेबाजी के कारण। परन्तु सभी कुछ ठीक-ठाक हो गया। तो किसी व्यक्ति की छोटी-छोटी चीजों को आप देखेंगे तो उसे बहुत

अच्छा लगेगा।

मैं आपको ग्रेगोर की एक बात बताती हूँ। किसी दुकान पर हम साड़ियाँ देखने गए। एक साड़ी मुझे अच्छी लगी परन्तु उसे मैंने नहीं खरीदा। मुझे लगा कि इतना सारा पैसा बेकार करना ठीक न था। मैंने वह साड़ी छोड़ दी। अगले दिन मुझे भेंट करने के लिए ग्रेगोर वही साड़ी लाया। उस साड़ी को मैंने खजाने की तरह से संभाल कर रखा। छोटी-छोटी चीजों को बहुत महत्व दिया जा सकता है।

एक बार मेरे पति के दफ्तर के एक व्यक्ति ने अधिक तनख्वाह की लालच में दूसरी संस्था में नौकरी कर ली। जब वह वहाँ गया तो उसे पता चला कि वहाँ की स्थिति बहुत ही खराब है। वहाँ जाकर वह बहुत दुखी हुआ और वापिस अपने पुराने कार्यालय आना चाहा। जब वापिस आया तो मेरे पति बहुत नाराज हुए और कहने लगे, "कि मैंने तुम्हें जाने से रोका था परन्तु तुमने मेरी बात नहीं मानी। अब मैं तुम्हें वापिस नहीं ले सकता।" वह व्यक्ति मेरे पास आया। न जाने उसने क्या सोचा? उसने मुझे सारी घटना बताई और कहा कि वह जहाजरानी निगम में वापिस आना चाहता है। कहने लगा, "मुझसे कुछ गलती हुई और अब श्री श्रीवास्तव मुझसे नाराज हैं और अब मुझे वापिस नहीं लेना चाहते। मेरे पति जब घर आए तो मैंने उनसे कहा, कि वह मुझसे मिलने आया था, "ओह! तो वह तुम्हारे पास आया था जैसे तुम मेरी अफसर हो।" और वे बहुत गुस्से हो गए। मैंने कहा वह आपके निगम में आना चाहता है मेरे विचार से आपको उसका ध्यान रखना चाहिए।"

"कहने लगे वह तुम्हारे पास क्यों आया? मैंने कहा, "सम्भवतः उसने ये सोचा होगा कि मैं आपसे ज्यादा क्षमाशील हूँ। कहने लगे, "कि मैं भी क्षमाशील हो सकता हूँ।" तो उसे क्षमा कर दें, मुझमें ये युक्तियाँ स्वाभाविक रूप से हैं, आप भी इन्हें आत्मसात कर सकते हैं। दूसरे लोगों को प्रभावित करना कठिन नहीं है। छोटी-छोटी चीजों से बहुत अन्तर पड़ता है। आपके कर्मचारी यदि बीमार हों तो उनकी देखभाल करें, पता लगाएं कि उनकी पत्नियाँ और बच्चे तो बीमार नहीं हैं, उनका ध्यान रखें। संस्था को परिवार की तरह से लिया जाना चाहिए। किसी के पति-पत्नी यदि बीमार हैं तो उन्हें फूल भेज दें।

क्रिसमस आदि पर लोग प्रायः एक कार्ड भेज देते हैं लेकिन संस्था की अपनी ही कार्ड भेजने की शैली होनी चाहिए। कार्ड पर आप स्वयं हस्ताक्षर करें और उस पर थोड़ा सा अपने हाथ से अवश्य लिखें। मुझे आशा है आपकी पत्नी ठीक होगी, मुझे आशा है आपके बच्चे ठीक होंगे। यदि आप उनकी पत्नी को जानते हैं तो लिखें, "उन्हें मेरा नमस्कार कहना।" उन्हें शराब आदि पिलाने की जरूरत नहीं है, केवल यह महसूस करवाना आवश्यक है कि उन्हें प्रेम किया जाना है तथा वे संस्था से जुड़े हुए हैं और वे महत्वपूर्ण हैं।

किसी के पद परिवर्तन के विषय में भी सावधानी बरतें। मान लो मैं चाहती हूँ कि क्रिस्टिन अमरीका की लीडर बनें और ग्रेगोर भी वहाँ हो परन्तु क्रिस्टिन के मामलों में दखलान्दाजी न करें तो मैंने कहा, "ग्रेगोर देखो वह वहाँ पर है और वह बहुत अच्छे ढंग से लोगों से बर्ताव

कर रही है। वहाँ के लोगों को वह जानती है तथा लोग भी उसे प्रेम करते हैं तथा सम्मान करते हैं। आप एक नए व्यक्ति हो जो वहाँ जा रहे हो और क्रिस्टिन के पति भी हो। आप विश्व लीडर हैं इसलिए आपको वहाँ के स्थानीय मामलों में दखलन्दाजी नहीं करनी।" और उसने इस बात को समझ लिया। यदि मैंने कहा होता, "वहाँ जाकर कुछ नहीं बोलना, अब तुम चुप रहना, तो सम्भवतः ये बात कार्यान्वित न होती। वह यह सब जानता है। राजेश को भी मैं यही बात कहूंगी कि विश्व में कहीं भी जाकर सहज का कार्य करो।

बिना पूरा प्रबन्ध किए लोगों को अचानक दूसरी जगह मत भेजो। इस बात का ध्यान रखो कि जिस व्यक्ति को भेजा गया है उसके लिए ठीक से प्रबन्ध है। देखें कि वास्तव में आप उस व्यक्ति को दूसरे स्थान पर भेजना चाहते हैं। पूरी तरह से आप यदि विश्वस्त नहीं हैं तो मामले को लटकने दें। समय के अनुसार ये सब चीजें भली-भाँति घटित हो जाती हैं। थोड़ा सा समय गुजर जाने दें। व्यक्ति को इसके विषय में संकेत दें, "लोग शिकायत कर रहे हैं, क्या करें? मैं चाहूंगी कि तुम मेरी सहायता करो।" ताकि उसे लगे कि आपने सुधरने के लिए उसे काफी समय दिया। बिना समय दिए यदि आप किसी को कहें, "कि अब आप यहाँ से चले जाओ।" तो वह आपका शत्रु बन जाएगा।

इसके विपरीत आपको कहना चाहिए, "मुझे खेद है, परन्तु ये लोग ऐसे ही हैं, ये हमें कष्ट देने का प्रयत्न कर रहे हैं और मुझे हर समय परेशान कर रहे हैं। मेरी भी समझ में नहीं आता

कि उनमें क्या कमी है। परन्तु कृपा करके इन सब चीजों का ध्यान रखो, इस तरह से कार्य हो जाएगा। लोग आपको गम्भीरता से लेंगे क्योंकि वे जानते हैं कि आप स्वयं जिम्मेदार हैं और उन पर जिम्मेदारी डाल रहे हैं। ये सब इस प्रकार होना चाहिए।

लखनऊ में मिठाइयों की एक बहुत प्रसिद्ध दुकान है। उसके पिता की मृत्यु हो गई है परन्तु बेटा वहाँ पर है। उसका बहुत बड़ा सा पेट है, फिर भी वह वहाँ बैठा रहता है। कार लेकर आप वहाँ जा सकते हैं क्योंकि दुकान अच्छी खासी दूरी पर है। उसकी युक्ति पर मैंने ध्यान दिया। सबसे पहले वह मिठाई के लिए आपका आदेश लेता है। आपको बिठाकर वह अपने नौकरों से कहेगा, "तुम लोग क्या कर रहे हो? इनका सामान क्यों नहीं देते, इतने समय से ये यहाँ बैठे हैं, इन लोगों की ओर देखो। लोगों का इतना समय बर्बाद करते हैं। फिर उसने मुझसे पूछा आपने अभी तो हवाई जहाज से नहीं जाना? मैंने कहा, "नहीं, मैं ठीक हूँ।" तो सदैव उसके पास यही बहाना होता है। तब वह कहने लगा, "मैंने ये मिठाई बहुत विशेष रूप से बनाई है आप इसे चखकर देखें। आप उस चीज का स्वाद देखेंगे और कहेंगे, ठीक है, ये चीज भी मुझे दे दो। इस प्रकार से वह चलता रहता है। समय लगाता है और कुछ समय के पश्चात कहता है, "इन लोगों की ओर देखो ये कितने खराब हैं। अपना काम समाप्त करना भी इन्हें नहीं आता। अरे, वहाँ क्या कर रहे हो, इन श्रीमतीजी को मिठाईयाँ क्यों नहीं देते? इन्होंने अभी जाना है। इतना समय क्यों लगा रहे हो? मुझे खेद है, आप ये मिठाईयाँ

चखेंगी? और वे ये सब आपके चखने के लिए ले आएंगे। आप कुछ भी खाइए। आप कहते हैं, "ठीक है, इन सब चीजों को खाते-खाते जब आप दुकान से बाहर निकलने लगते हैं तो आपकी जेब के सारे पैसे समाप्त हो चुके होते हैं क्योंकि दुकान की हर मिठाई आप खरीद लेते हैं। उसकी यही युक्ति है। कुछ समय बाद आप यह सब समझ जाते हैं और उससे कहते हैं कि मैं ये सब चालाकियाँ जानता हूँ, आप मुझे वो सब दे दें जिसकी मुझे जरूरत है।

मैं ये कहने का प्रयत्न कर रही हूँ कि जब आप उसे अपनी चीजें बेचते हुए देखते हैं तो मधुरता का एक रिश्ता विकसित हो जाता है। इसके विपरीत यदि कोई कहे कि, "ये मेरी बनाई हुई चीज है आपको यदि चाहिए तो ले लो नहीं तो बाहर हो जाओ। तो आप एकदम वहाँ से बाहर ही हाँ जाएंगे।

बेचने का पूरा दृष्टिकोण इस प्रकार क्रेता और विक्रेता के सम्बन्धों पर आ जाता है। सम्बन्ध कार्य करते हैं उत्पाद नहीं। उत्पाद को भाड़ में जाने दो उसकी कोई चिन्ता नहीं करता। पाँच तरह के उत्पाद यदि एक ही तरह के हों तो आप उस संस्था के पास जाएंगे जो विवेकशील हो और सम्मानपूर्वक लोगों से व्यवहार करती हो और समय पर अच्छी चीजें उन्हें पहुँचाती हो। परन्तु पहले पता लगाए कि अन्य संस्थाओं में क्या गुण हैं? उनके पास क्या चीज है? वे क्या बेच रहे हैं? परन्तु अधिकतर मैंने देखा है कि ग्राहक के साथ आपके सम्बन्ध कार्य करते हैं।

दफ्तर में भी आपके सम्बन्ध अच्छे होने चाहिए। सर्वोपरि आपका व्यक्तित्व अच्छा होना

चाहिए। दफ्तर में फैशनेबुल वस्त्र पहनने वाले अच्छे प्रशासक नहीं हो सकते क्योंकि वे ढीले पड़ जाते हैं और ढीले व्यक्तित्व के लोगों का नाजायज लाभ उठाया जाता है। एक तरह से आपको सख्त होना चाहिए। सदैव दफ्तर के उपयुक्त वस्त्र पहनें तो लोगों को इससे घबराहट होगी।

इसी प्रकार आजकल दफ्तर में एक डाइवर भी अपने अफसर को कहता है, "हे टॉम, आप कैसे हो?" कोई सम्मान नहीं है या यदि अफसर कोई नशा लेता है, जैसे भारत में तम्बाकू खाते हैं, तो कोई अदना सा कर्मचारी भी जब उसके पास जाता है तो अफसर उससे भी यही पूछता है तुम्हारे पास थोड़ा सा तम्बाकू है? और वह अपनी जेब से निकालकर उसे तम्बाकू देता है। बस हो गई सारी मर्यादा समाप्त। तो इस तरह की सारी आदतें हानिकारक हैं। इनसे मुक्त होने का प्रयत्न करें। आप ऐसा अगर नहीं कर सकें तो भी अपने मातहत कर्मचारियों से उम्मीद न करें कि वे आपकी इस आदत को ठीक बताएं। घटिया मजाक और चीजें कोई पसन्द नहीं करता परन्तु ये छोटे कर्मचारी ऐसे मजाक करते हैं और समझते हैं कि वे लोकप्रिय हैं। वे लोकप्रिय नहीं हैं क्योंकि लोकप्रियता तो अपनी विशेषताओं से पाई जा सकती है उन जैसा बनके नहीं।

मैं आपको एक अन्य घटना बताती हूँ श्री सी.पी. के दफ्तर में एक महिला थी जो जीन्स पहनकर आती थी। श्री सी.पी. ने उसे बुलाया और कहा श्रीमती जी मैं नहीं चाहूँगा कि आप ऐसे वस्त्र पहनें। आप पैन्ट या कोई भी विवेकशील वेशभूषा पहन सकती हैं परन्तु ये जीन मत

पहनिए। वह कहने लगी, "ठीक है, गलियों में, घर में या अन्यत्र ये पहनी जा सकती है तो यहाँ क्यों नहीं? ऐसा नहीं हो सकता।" श्री सी.पी. ने कहा, "ठीक है, तो कृपा करके आप त्याग-पत्र दे दें, मैं तुम्हें नहीं रखूँगा। तत्पश्चात् उसने ठीक प्रकार के कपड़े पहनने शुरू कर दिए। अच्छी वेशभूषा से काफी फ़र्क पड़ता है।

कल मेरे पास कोई सफ़ेद साड़ी न थी। अपने कार्यक्रमों में मैं सदैव सफ़ेद साड़ी पहनती हूँ। लाल बार्डर वाली सफ़ेद साड़ी कल मुझे पहननी पड़ी। इससे बहुत फ़र्क पड़ता है। मान लो मैं आपसे मिलने आ रही हूँ तो मेरी वेशभूषा का आप पर बहुत असर पड़ेगा," ओह! श्री माताजी ने हमसे मिलने के लिए फ़लां साड़ी पहनी थी। यह आपको अन्दर प्रकाश की तरह से है। आपकी वेशभूषा और आपका आचरण आपके अन्तः को दर्शाता है। किसी प्रकार की ढील आपके प्रशासन को खराब करती है। अतः सदैव अपने पद का ध्यान रखें।

मैंने देखा है कि दफ़्तरों में लोग उलट कर जवाब देते हैं। आपके अपने लोग सामने बोलते हैं। परन्तु यदि जापान की कम्पनियों को देखें तो वहाँ केवल एक व्यक्ति बोलता है बाकी सब चुप्पी साधे बैठे रहते हैं। जब वह उनसे कोई प्रश्न पूछता है तभी वह बोलते हैं। उनमें एक प्रकार की निष्ठा बनी हुई है। किसी भी कार्यक्रम पर जाने से पहले वह पाँच लोगों को बुलाएगा और उनसे कहेगा हमें ऐसा करना है। तुम्हें ये बात कहनी है और तुम्हें ये। सभी कुछ पूर्वनिश्चित होता है। अन्य लोगों की उपस्थिति में किसी को भी बोलने की स्वतन्त्रता नहीं होती।

हम अपने बच्चों के साथ भी ऐसा ही करते हैं। भारतीयों को जब किसी के घर जाना होता है तो वे पहले ही बच्चों को सिखाते हैं कि वहाँ जाकर तुम्हें कुछ माँगना नहीं है। उनकी किसी चीज़ को हाथ नहीं लगाना बहुत अधिक नहीं खाना। खाना भी हो तो बहुत कम खाना है। जब आपको कुछ दिया जाए तो धन्यवाद कहना है। वहाँ पहुँचने पर सबको नमस्कार करना है। घर पर ही ये सब चीज़ें बच्चों को सिखाई जाती हैं और कहा जाता है यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो अगली बार तुम्हें साथ नहीं ले जाएंगे।

तो इस प्रकार उन्हें पहले से ही सावधान कर दिया जाता है। वास्तव में उन्हें इस चीज़ का ज्ञान होता है कि क्या करना है। मान लो बिना तैयारी के अपनी संस्था के पाँच लोगों को आप मीटिंग में ले जाते हैं तो वे वहाँ पर बहस करने लगते हैं। आरम्भ में सहजयोगी ऐसा ही किया करते थे। अन्य लोगों के सामने वे मुझसे बहस किया करते थे जिसके कारण समस्या होती थी। अतः मुझे उनसे कहना पड़ा कि अन्य लोगों के सामने बहस न करें। आपने यदि मुझे कुछ बताना ही है तो अलग से बताएं। परस्पर भी ईर्ष्या-भाव नहीं होने चाहिए। अपने लोगों के बीच ईर्ष्या बहुत देखने को मिलती है। आपको बताना होगा, "हर आदमी का अपना कार्य है सभी कुछ करना है और अच्छी तरह से करना है। हम सब साथ हैं और एक हैं। आप सब इन दो हाथों की तरह से हैं एक बायां है और एक दायां। तो परस्पर ईर्ष्या कैसी? इस प्रकार सभी कुछ ठीक हो जाएगा। संस्था सशक्त हो जाएगी जिसका लाभ हम सबको होगा। अतः संस्था के

प्रति उन्हें निष्ठावान बनाएं। हमारे शुद्ध लाभ अगर अधिक हैं तो अच्छे बोनस भी दिए जाने चाहिए।

तो अन्दर से मैं समझती हूँ कि आपकी कुण्डलिनी बहुत अच्छी है और जानती हूँ कि कार्यों को किस प्रकार करना है। मान लो मुझे किसी से आपके विषय में कहना है तो मैं कहूँगी कि "उसकी देखभाल करते हुए ये कार्य करो?" हो सकता है वह लापरवाह हो, वह मेरी बात को नहीं समझेगा। वह कहेगा, "श्रीमाताजी ऐसा कह रही थी।" अतः मुझे उसको चेतावनी देनी होगी, "आप स्वयं ये सब कहो, उसके बोलने से पहले ये सब कुछ समझाया जाना आवश्यक है क्योंकि कार्य हो जाने के पश्चात्

कहने का क्या लाभ? वह यदि कारण बताने के लिए आपके पास आए तो आपको ये कहने के लिए तैयार होना होगा कि उसे ये बात क्यों करनी पड़ी और मैंने यह बात क्यों नहीं कही। मैंने स्वयं ये बात इसलिए नहीं कही ताकि मूर्खता करने वाला वह व्यक्ति अपना स्थान पहचान ले और आपके सम्बन्ध भी ठीक ठीक बने रहें। अतः आपके पारस्परिक सम्बन्ध, आपकी गरिमा, आत्मसम्मान और अन्य लोगों के सम्मान बनाए रखते हुए पनपने चाहिए। जिस प्रकार आप अपने प्रति व्यवहार करते हैं वैसे ही अन्य लोगों से करें। आपमें यदि अपने प्रति ही सम्मान नहीं है तो किस प्रकार आप अन्य लोगों का सम्मान करेंगे।





